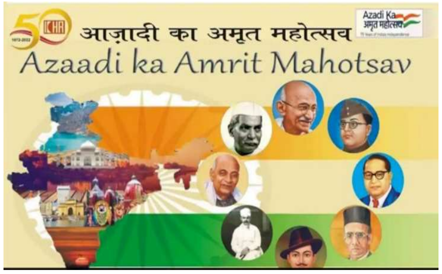

पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण)

मालीगाँव, गुवाहाटी-11

संवाद पत्र

57वाँ अंक (जुलाई - दिसम्बर, 2022)

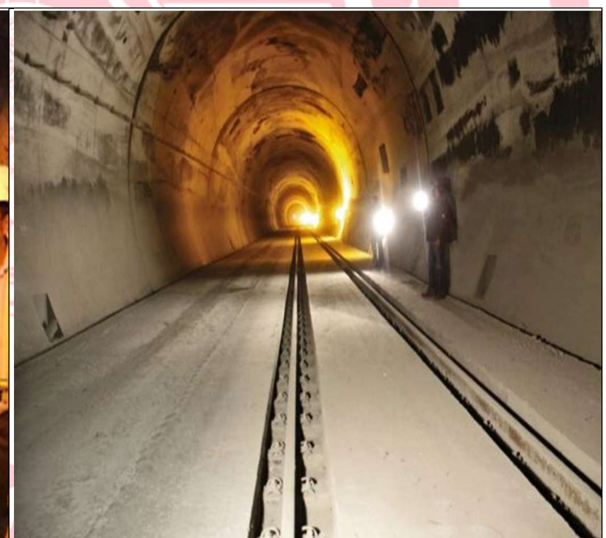

[माननीया रेल राज्य मंत्री श्रीमती दर्शना विक्रम जरदोश]
[जिरीबाम - इम्फाल रेल लाइन परियोजना का निरीक्षण करते हुए]

संरक्षक - श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक (निर्माण)
मुख्य संपादक - श्री राजेश कुमार, मुख्य राजभाषा अधिकारी (निर्माण)
उप मुख्य संपादक - श्री दीपक कुमार गुप्ता, उप मुख्य बिजली इंजीनियर (निर्माण)
संपादक - श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी (निर्माण)

विषय अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.	लेखक
1.	संरक्षक की लेखनी से...	iv	-
2.	मुख्य संपादक का संदेश	v	-
3.	उप मुख्य संपादक की ओर से	vi	-
4.	संपादक के कलम से...	vii	-
5.	स्वतंत्रता दिवस, 2022	1	-
6.	निर्माण संगठन की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ	2	-
7.	राजभाषा विषयक उपलब्धियाँ	3	-
8.	मैं ऐसा नहीं हूँ (कविता)	4	श्री विजित गोरा रामसियारी, पिऊन, महाप्रबंधक/निर्माण प्रकोष्ठ
9.	राजभाषा सप्ताह, 2022	5	-
10.	राजभाषा सप्ताह, 2022 की झलकियाँ	6	-
11.	राजभाषा सप्ताह, 2022 में बच्चों द्वारा कविता पाठ	7	-
12.	क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माण की बैठक एवं राजभाषा सप्ताह, 2022 का समापन	7-8	-
13.	पहाड़ का इंजीनियर	9	श्री विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर /निर्माण - 7
14.	हिंदी कार्यशालाएँ	10-11	-
15.	पूर्वोत्तर सीमा रेल /निर्माण संगठन में भूस्खलन पर हिंदी में तकनीकी संगोष्ठी	11-12	-
16.	सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2022	13-14	-
17.	एक विकल्प यह भी	15-18	श्री विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर /निर्माण - 7
18.	मैं भारत हूँ	18	श्री अटु लाल ठाकुर, लेखा सहायक /निर्माण
19.	ई-ऑफिस - कागज रहित कार्यालय समाधान (सॉल्यूशन)	19-20	श्रीमती रेखामोनी चुतिया, सहा. सिग. एवं दू.सं.इंजी./नि.
20.	गलतियाँ	21-22	श्री विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर /निर्माण - 7
21.	पहले और अब	23	श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी /निर्माण
22.	कठस्थ 2.0	24	श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी /निर्माण
23.	अखवारों की सुर्खियाँ	25	-
24.	नागालैण्ड-गुवाहाटी डोनी पोलो एक्सप्रेस का उद्घाटन	26	-
25.	रेल संरक्षा आयुक्त का निरीक्षण	26-27	-
26.	एक राष्ट्र में नागरिकों की भूमिका	28-29	श्री रामकेश मीना, सीनि.से. इंजी./ नि./ अभिकल्प
27.	क्षेत्रीय रेल हिंदी निबंध प्रतियोगिता (आधार वर्ष - 2022) का चित्र	30	-

क्र.स.	विषय	पृ.स.	लेखक
28.	क्षेत्रीय रेल हिंदी वाक् प्रतियोगिता (आधार वर्ष - 2022) का चित्र	31	-
29.	क्षेत्रीय रेल हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता (आधार वर्ष - 2022) का चित्र	32	-
30.	वीर लाचित बरफूकन की 400वीं जयती	33-34	-
31.	अंत नहीं आरंभ है	34	श्रीमती नम्रता भट्टाचार्य
32.	मेरे इशारों पर आज भी वो नाचता है	35	श्रीमती जया शर्मा
33.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति केंद्रीय कार्यालय -2 की बैठक की झलक	36	-

कार्यालयीन हिंदी भाषा की प्रमुख विशेषताएँ

1. **सरल एवं स्पष्ट भाषा -** कार्यालय में द्वि-अर्थी और अटपटे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जैसे - "इसका अनुमोदन करने से बड़ा अच्छा होता" जैसे वाक्य न लिखकर "अनुमोदित" शब्द लिखें।
2. **संक्षिप्तता -** ऊपर के ऊदाहरण में संक्षिप्तता की भी झलक है।
3. **अर्थ की स्पष्टता -** कार्यालयीन भाषा में साहित्यिक भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इसमें मुख्य विषय को दूसरे के सामने संप्रेषित करना होता है जो बिना किसी लाग-लपेट के "सटीक" होना चाहिए। जिसे अंग्रेजी में "टू दी प्वाइंट" कहते हैं।
4. **दूसरी भाषाओं के प्रचलित शब्दों का प्रयोग –** अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाने के लिए आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक और वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण कर हिंदी को समृद्ध बनाएँ। अत: रजिस्टर, स्टेशन, ट्रेन, टोकन, टेलीफोन, सिगनल आदि का बेझिझक प्रयोग करें।
5. **वाक्य विन्यास -** वाक्य हिंदी की प्रकृति के अनुकूल होना चाहिए जैसे - पेड़ से गिरने वाला लड़का आज मर गया। The boy, who fell down from the tree, died today का हिंदी रूपांतर वह लड़का, जो पेड़ से गिरा था आज मर गया। ठीक नहीं है।
6. **एकरूपता -** सरकार की शब्दावली निर्माण आयोग द्वारा अनुमोदित शब्दावली के प्रयोग का आग्रह किया जाता है। जैसे -"Findings" का "निष्कर्ष" शब्दावली के अनुसार है, जिसका प्रयोग करें न कि प्राप्ति, उपलब्धि, परिणाम, निर्णय, अधिगम आदि।
7. **सुसंस्कृत या सभ्य भाषा का प्रयोग -** पहले किसी के निर्णय यदि गलत साबित हुए हों तो यह न लिखा जाए कि - "वह इतना मूर्ख था कि इतना भी उसकी समझ में नही आया" के बदले "उस समय इन बातों पर विचार नहीं किया गया" लिखा जाना चाहिए। इसमें आदेशात्मक, सुझावात्मक, कथनात्मक वाक्यों का प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे - फाइल पर प्रस्तुत किया जाए। मंत्रालय का अनुमोदन प्राप्त किया जाए। चर्चा के अनुसार मसौदा पुन: प्रस्तुत किया जाए। अर्थात् कार्यालयीन हिंदी में कर्म वाच्य की प्रधानता होती है।

संरक्षक की लेखनी से...

निर्माण संगठन तो अपना रास्ता खुद बनाता है, मंजिल को अपने करीब लाता है।
काम कितना भी मुश्किल हो तो क्या हुआ, असंभव को भी संभव कर दिखाता है।।

इन पंक्तियों में अंतर्निहित जोश के साथ इस नए वर्ष में हम सभी को राजभाषा हिंदी के साथ मानसिक और आत्मिक रूप से जुड़ना होगा तथा हिंदी की प्रगति के लिए ठोस कदम उठाते हुए उसकी समय-समय पर समीक्षा भी करनी होगी। निर्माण संगठन के सभी विभागाध्यक्षों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी कार्यशैली के जुरूरी अंग के रूप में राजभाषा हिंदी की समीक्षा करके नए वर्ष में नई पहल करनी चाहिए ताकि राजभाषा का कार्यान्वयन सही ढ़ंग से हो सके और निर्माण संगठन के एक अभिन्न अंग के रूप में हम यह बता सकें कि हमारी संपर्क भाषा तो हिंदी है ही, परन्तु हम अपना अधिकतर सरकारी कार्य भी नई तकनीक के माध्यम से हिंदी में करते हैं। पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण संगठन) का कार्यालय पूर्वोत्तर भारत के भाषाई वैविध्य के बीच स्थित है जहाँ दस राज्यों को एकता के सूत्र में बांधते हुए अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं और जहाँ हिंदी संपर्क भाषा के रूप में विकसित हो गयी है। अपनी सरलता, आंतरिक ऊर्जा और जनजुड़ाव के बल पर हिंदी पूर्वोत्तर क्षेत्र में निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। अहिंदी भाषी अधिकारी, कर्मचारी फर्राटेदार हिंदी बोल, समझ और लिख सकते हैं, जो अत्यंत सराहनीय एवं एकता के प्रतीक हैं। पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) में हिंदी का भविष्य उज्जवल है। इसी सकारात्मक सोंच के साथ मैं आशा करता हूँ कि आप सभी यह संकल्प लें कि इस नए वर्ष में अपना अधिकतर कार्य हिंदी के माध्यम से करेंगे और संविधान में निर्धारित राजभाषा हिंदी की संवैधानिक दिशानिर्देशों का सही-सही अनुपालन करेंगे।

इसी विश्वास के साथ आप सभी को नव वर्ष, *2023* के शुभागमन पर अनेकों शुभकामनाएँ एवं नए वर्ष पर *"संवाद पत्र" के 57वे अंक* के प्रकाशन के लिए राजभाषा विभाग/निर्माण को बधाई देता हूँ।

(अंशुल गुप्ता)
महाप्रबंधक, पू.सी.रेल / निर्माण

मुख्य संपादक का संदेश

पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) जिन क्षेत्रों में कार्यरत है, वह विविधताओं से भरपूर एक अनूठा क्षेत्र है, जहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं में परस्पर इतनी भिन्नता है कि इसके एक कोने से दूसरे कोने तक किसी एक भाषा के सहारे यात्रा कर पाना लगभग असंभव है। इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) के तहत आने वाले क्षेत्र को भाषाई रूप में एकबद्ध करने में हिन्दी की सबसे अहम एवं बड़ी भूमिका है। इसी भूमिका को ध्यान में रखते हुए निर्माण संगठन का राजभाषा विभाग भी **संवाद पत्र नामक हिन्दी पत्रिका का 57 वाँ संस्करण** निकाला है जो एक सराहनीय कदम है। हिन्दी का उद्गम ही बहु - सांस्कृतिक परिवेश में हुआ और उसकी यह प्रकृति बनी रही। अपनी सरलता, सुबोधता और सुगमता के कारण ही तो हिन्दी ने पूरे भारत की राजभाषा बनने का जो गौरव प्राप्त किया है, वह सर्वथा उपयुक्त है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और इसके बाद हिन्दी ने हमारे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोया है तथा विविधता में एकता की भावना को मजबूत बनाए रखा है। अपनी दिन-दुनी, रात-चौगुनी बढ़ती लोकप्रियता के कारण हिन्दी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। आज जब हम अपने देश की आजादी के अमृत काल का उत्सव मना रहे हैं, भविष्य के आत्मनिर्भर भारत में सूचना के संचार और कल्याणकारी योजनाओं के प्रसार में हिन्दी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होने वाली है। वर्तमान में तकनीकी के विकास से यांत्रिक सुविधाएँ इतनी सरल हो गई है कि हिन्दी सहज रूप में देश भर में अपना विस्तार कर रही है। यह हम सभी के लिए अत्यंत सकारात्मक स्थिति है। निर्माण संगठन के हम सभी क्यों न यह संकल्प लें कि, ***"आजादी के अमृत काल में हम सभी करें ऐसा प्रयास कि पूर्वोत्तर क्षेत्र के भाषाई सौहार्द में हिन्दी की भूमिका हो सबसे खास। आइए, अपनी राजभाषा हिन्दी की भूमिका को दें विस्तार, पहले अपनाएँ, फिर बनाएँ इसे भारतीय जन मानस का हृदय हार"।***

नव वर्ष, 2023 मंगलमय हो !

राजेश कुमार

(राजेश कुमार)

मुख्य राजभाषा अधिकारी

पू.सी.रेल / निर्माण

उप मुख्य संपादक की ओर से...

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि निर्माण संगठन का राजभाषा विभाग ई-पत्रिका के रूप में **संवाद पत्र का 57वाँ अंक** प्रकाशित कर रहा है। इस कार्य के लिए राजभाषा विभाग बधाई का पात्र है। हिंदी भाषा भारत की गौरवशाली परंपरा और संस्कृति का वाहक है। जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, वह भाषा के बिना अधूरा है। चाहे आप शिक्षा के क्षेत्र में कितनी भी महत्वपूर्ण डिग्री क्यों न हासिल किए हों, आप रेल में इंजीनियर हों या कोई और कार्यक्षेत्र के किसी भी पद पर हों, एक अच्छा और दक्ष कार्यकारी बनने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है, हिंदी में ये सारे गुण मौजूद हैं। हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ ही दैनिक जीवन, साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक आदि पहलुओं में इसके महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। अपने कार्यक्षेत्र में जब आप नेतृत्व करने लगते हैं, तो अच्छा टीम-लीडर बनने में हिंदी आपकी मदद करती है। व्यक्तित्व विकास में हिंदी के प्रेरक और साहित्यिक भंडार से काफी कुछ प्राप्त किया जा सकता है, जो निर्माण संगठन के हिंदी पुस्तकालय में उपलब्ध बेहतरीन पुस्तकों को पढ़ने से संभव हो सकता है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में रेल का योगदान जबरदस्त है। इसीलिए तो हम कहते हैं कि ***"रेल की भाषा, मेल की भाषा, देश की भाषा, हिंदी भाषा"***। निर्माण संगठन में सभी क्षेत्रीय भाषाओं के बोलने और समझने वाले लोग हैं, हिंदी सभी क्षेत्रीय भाषा-भाषी लोगों से संबल प्राप्त करते हुए उनके मध्य एक सेतु का कार्य करता है और ऐसा करने में वह पूर्णतया सक्षम भी है। हिंदी समझने में आसान है, इस कारण देश के कोने-कोने में हिंदी जानने वाले मौजूद हैं। इस पत्रिका में भी अहिंदी भाषी कर्मचारीगण भी हिंदी में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत किए हैं, जो प्रोत्साहन योग्य कार्य है।

नव वर्ष, 2023 की शुभकामनाओं सहित...

DEEPAK KUMAR GUPTA Digitally signed by DEEPAK KUMAR GUPTA Date: 2023.01.18 15:50:46 +05'30'

(दीपक कुमार गुप्ता)

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

पू.सी.रेल / निर्माण

संपादक के कलम से...

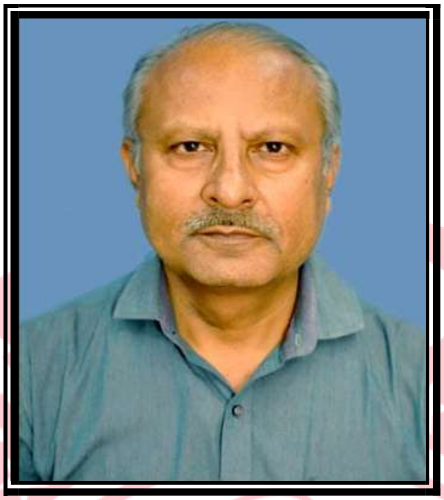

भाषा के रूप में हिंदी सम्पूर्ण राष्ट्र को जोड़ने वाली इकाई है अर्थात् राष्ट्रीय एकता संजोए रखने वाले तत्वों में हिंदी भाषा सशक्त कड़ी रही है। इसी गुण के कारण इसे आगे भी ऐसा ही रहना चाहिए। यह इसलिए कि इसमें जन से जन को जोड़ने की सामर्थ्य है। व्यावहारिक रूप में यह तब ज्यादा असरदार होगा जब हमारे सभी नागरिक हिंदी में बोल सकें, हिंदी में पढ़ सकें और हिंदी में लिख सकें। इसके लिए कोई न कोई माध्यम होना चाहिए जैसे - पाठ्य पुस्तक, अखबार, पत्र-पत्रिका, चलचित्र, नाटक, संगोष्ठियाँ आदि। इसी उद्येश्य को ध्यान में रखते हुए निर्माण संगठन का राजभाषा विभाग **संवाद पत्र का 57वाँ संस्करण** आपके समक्ष **ई-पत्रिका** के रूप में प्रकाशित किया है ताकि निर्माण संगठन में राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार हो सके। आज हिंदी विश्व के अनेक देशों में अपना परचम लहरा रही है। प्रतीक्षा है, घर-घर लहराए। आज हिंदी ने न केवल साहित्य में बल्कि ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी से भी स्वयं को जोड़ा है। अभी हाल ही में मध्य प्रदेश सरकार चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई हिंदी माध्यम से शुरू की है, इसके लिए चिकित्सा विज्ञान की पुस्तके हिंदी माध्यम में जारी की है। यह एक बड़ा कदम है, जो गर्व की बात है। हमें हिंदी में अपना दैनिक सरकारी कार्य करने में कभी संकोच नहीं करना चाहिए। निर्माण संगठन में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रकाशित होने वाली संवाद पत्र के लिए आप सभी की रचनाएँ संजीवनी की भाँति होगी जो पाठकों में एक नई स्फूर्ति, ताजगी, उत्साह, जोश एवं उल्लास भरेगी। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि इसी तरह विभिन्न ज्ञानोपयोगी रचनाएँ प्रकाशन हेतु भेजते रहें ताकि प्रकाशन का सिलसिला आगे भी बढ़ता रहे तथा पत्रिका नए आयाम स्थापित करती रहे।

इसी आशा के साथ, आप सभी को नव वर्ष, 2023 की हार्दिक शुभकामनाएँ!

RAJESH RANJAN KUMAR
Digitally signed by RAJESH RANJAN KUMAR
Date: 2023.01.18 15:09:43 +05'30'

(राजेश रंजन कुमार)
राजभाषा अधिकारी
पू.सी.रेल/निर्माण

श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक (निर्माण) के नेतृत्व में 15 अगस्त, 2022 को 75वाँ स्वंतत्रता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर निर्माण संगठन एवं पूर्वोत्तर सीमा रेल, मुख्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। महाप्रबंधक (निर्माण) ने इस अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के पश्चात् अपना संबोधन प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम ब्रिटिश शासन से भारत माता की आजादी की 75वें वर्ष के शुभअवसर पर अपने स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा जो बलिदान दिया गया उसी इतिहास को फिर से स्मृति पटल पर लाने के लिए आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि 14 मई को अत्यधिक वर्षा के कारण 61(इकसठ) स्थानों पर ट्रैक में दरार होने के कारण लामडिंग-बदरपुर हिल सेक्शन का रेल संपर्क टूट गया जिसे महज 2(दो) महीनों के रिकार्ड समय में ठीक कर गाड़ियों की पुनर्बहाली शुरू कर दी गयी। 29 और 30 जून, 2022 की रात तुपुल के निर्माणाधीन रेलवे स्टेशन यार्ड के भूस्खलन की एक बहुत ही दुखद घटना में हमने निर्माण संगठन के 3 (तीन) कर्मचारियों और प्रादेशिक सेना के करीब 79 (उनासी) बहादुर लोगों को खो दिया। 74.2 कि.मी. लाइनों के दोहरीकरण का काम शुरू कर दिया गया है। 43.5 कि.मी. नई लाइनें चालू की गयी है। 11(ग्यारह) स्टेशनों को **"विश्व-स्तरीय स्टेशन"** के रूप में पुनर्विकास के लिए लिया गया है। वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए पूर्वोत्तर सीमा रेल पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। एक नवोन्मेषी पायलट परियोजना **"इंट्रूशन डिटेक्शन प्रणाली"** को सफलतापूर्वक शुरू किया गया है। **"असम रेल इँफ्रास्ट्रक्चर डेवलॉप्मेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड"** नामक एक संयुक्त उद्यम कंपनी का गठन कार्य चल रहा है। यह कंपनी शहरी गतिशीलता के लिए मेट्रो प्रणाली के निर्माण हेतु असम में रेल से संबंधित बुनियादी ढ़ाँचा के विकास पर गौर करेगी। कामाख्या स्टेशन को विश्वस्तरीय स्टेशन के रूप में विकसित करने के साथ ही, निर्माण संगठन ने तीर्थयात्रियों और आगंतुकों की सुविधा लाभ के लिए कामाख्या स्टेशन से कामाख्या देवी मंदिर तक एक रोप-वे निर्माण करने की योजना बनाई है। पू.सी.रेल भारत स्काउट्स एंड गाइड ने कोविड-19 टीकाकरण अभियान में मदद की, स्वच्छ भारत मिशन में भाग लिया और आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान कार्यक्रम आयोजित किया। पूर्वोत्तर सीमा रेल के सभी 15 (पन्द्रह) रेलवे विद्यालयों में सप्ताहव्यापी **"अच्छी आदत अभियान"** चलाया गया, ताकि विद्यालयों के छात्रों में अच्छी स्वच्छता अभ्यासों के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ायी जा सके। श्री गुप्ता ने दोनों मान्यता प्राप्त यूनियनों के योगदान एवं समर्थन के लिए आभार व्यक्त करने के साथ ही, विभिन्न स्थानों पर चल रहे स्कूलों, हस्तकरघा और हस्तशील्प केंद्रों के विभिन्न गतिविधियों के आयोजन के लिए पू.सी.रेल महिला कल्याण संगठन की सराहना की।

निर्माण संगठन की उल्लेखनीय उपलब्धियाँ

1. न्यू बंगाईगाँव-गोवालपाड़ा-कामाख्या बड़ी लाइन दोहरीकरण परियोजना के अंतर्गत अभयापुरी-पंचरत्न (26.369 कि.मी.) का रेल संरक्षा आयुक्त द्वारा सफलतापूर्वक निरीक्षण किया गया तथा दिनांक 28.07.2022 को 100 कि.मी. प्रति घंटा का अनुमोदन प्राप्त हुआ। इस प्रकार, कुल 176 कि.मी. में गोवालपाड़ा टाउन होते हुए 72 कि.मी. न्यू बंगाईगाँव-कामाख्या दोहरीकरण परियोजना चालू किया गया।
2. न्यू बंगाईगाँव-अगरतला दोहरीकरण परियोजना का 18.18 कि.मी. का न्यू बंगाईगाँव-बिजनी हिस्से का मुख्य रेल संरक्षा आयुक्त द्वारा दिनांक 30.08.2022 को सफलतापूर्वक निरीक्षण किया गया। परियोजना को चालू करने का यह पहला चरण है। मुख्य रेल संरक्षा आयुक्त द्वारा 132 कि.मी. प्रति घंटे का प्राधिकार प्राप्त हुआ। इस खंड में पू.सी.रेल की लाइन क्षमता का अधिकतम उपयोग होता है तथा इसे क्रिटिकल प्रोजेक्ट के रूप में वर्गीकृत किया गया है। मंजूरी मिलने के 3(तीन) साल के अंदर यह चालू किया गया है जिसे सबसे जल्द चालू किये जाने वाली एवं पूर्वोत्तर सीमा रेल में 110 कि.मी. प्रति घंटे की अधिकतम स्वीकृत गति परियोजना के रूप में कहा जा सकता है। मुख्य रेल संरक्षा आयुक्त के स्वयं का कथन, शब्दश: इस प्रकार है - सिविल इंजीनियरी और इनडोर सिगनलिंग के कार्य उत्कृष्ट थे, बड़ा पुल से. 448 पर 130 कि.मी. प्रति घंटे की गति बहुत अच्छी थी। आयोग ने मुख्य इंजीनियर/निर्माण द्वारा कठिन परिस्थितियों में दोहरीकरण के क्रियान्वयन पर नेतृत्व प्रदान करने वाले दल की प्रशंसा की।
3. नागालैंड के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा शोखुवी तक बढ़ाए गए नाहरलगुन-गुवाहाटी डोनी-पोलो एक्सप्रेस का दिनांक 26.08.2022 को उद्घाटन किया गया।
4. रेल संरक्षा आयुक्त द्वारा दिनांक 27 और 28.09.2022 को जिरीबाम-इंफाल नई लाइन परियोजना के वांगचुंगपाओ-खोंगसांग (43.33 कि.मी.) का निरीक्षण पूरा किया गया और दिनांक 03.10.2022 को प्राधिकार प्राप्त हुआ।
5. रेलवे बोर्ड के अधिकारियों के साथ दिनांक 07.09.2022 को बैठक की गयी।
6. असम और अरूणाचल प्रदेश के सांसदों के साथ तिनसुकिया में दिनांक 09.09.2022 को बैठक की गयी।
7. निर्माण संगठन, मंडलों और संबंधित जीएस इकाइयों के साथ दिनांक 09.09.2022 को कार्य समीक्षा की बैठक की गयी।
8. अगरतला स्टेशन का निरीक्षण और अगरतला-सबरूम सेक्शन से दिनांक 13.09.2022 को विंडोज ट्रेलिंग निरीक्षण किया गया।
9. त्रिपुरा के माननीय मुख्यमंत्री के साथ दिनांक 13.09.2022 को बैठक की गयी।
10. जीओसी, पूर्वी कमान के साथ बैठक एवं सामरिक क्षेत्र के लिए नई लाइन के निर्माण पर चर्चा तथा नाथुला, तवांग, आलोंग एवं परशुराम कुंड के एफएलएस पर चर्चा, सेना कमांडर को दस्तावेज पेश करते हुए दिनांक 16.09.2022 को रेल परिचालन की तैयारी पर बैठक की गयी।
11. बालुरघाट और बालुरघाट-हिली नई लाइन परियोजना का दिनांक 26.09.2022 को निरीक्षण किया गया।
12. गोवालपाड़ा टाउन होते हुए कामाख्या से न्यू बंगाईगाँव तक विंडोज ट्रेलिंग निरीक्षण तथा दिनांक 29.09.2022 को दोहरीकरण और रेल विद्युतीकरण कार्यों की समीक्षा की गई।

यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।

- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

राजभाषा विषयक उपलब्धियाँ

1. क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की संयुक्त बैठक दिनांक 07.06.2022 को आयोजित की गयी। यह बैठक निर्माण संगठन और पूर्वोत्तर सीमा रेल, मालीगाँव के साथ संयुक्त रूप से हुई।
2. जागीरोड स्टेशन (बड़ी लाइन) के स्टेशन संचालन नियम के परिशिष्ट (क) के 164 पृष्ठों में से 100 पृष्ठों का अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद, टंकण सहित विधिक्षा प्रक्रिया पूरी कर परिचालन विभाग को सौंपा गया।
3. हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 01.06.2022 से 07.06.2022 तक किया गया। इस 5 (पाँच) दिवसीय हिंदी कार्यशाला में ई-पास, एचआरएमएस, हिंदी व्याकरण एवं कार्यालयीन हिंदी आदि विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया जिसमें विभिन्न विभागों के कुल 45 (पैतालिस) कर्मचारी शामिल हुए।
4. चापराकाटा-एसके/48, बिजनी-एसके/45, बिजनी-एसके/46, न्यू बंगाईगाँव-एनएन/151, न्यू बंगाईगाँव -एनएन/50, जोगीघोपा-एनएन/170, अभयापुरी-एनएन/162, स्टेशन (बड़ी लाइन) के स्टेशन संचालन नियमों का अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद, टंकण सहित विधिक्षा प्रक्रिया पूरी कर परिचालन विभाग को सौपा गया।
5. सत्र जनवरी-मई, 2022 की भाषा प्रशिक्षण में प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत की परीक्षा परिणाम सर्वसंबंधितों को परिपत्रित किया गया तथा सत्र जुलाई-नवम्बर, 2022 के हिंदी प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत कक्षाओं के गठन हेतु अब तक 32 (बत्तीस) कर्मचारियों के नाम से संबंधित पत्र गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, मालीगाँव को आगे की कार्रवाई हेतु प्रेषित की गई।
6. जोगीघोपा-एनएन/169, के स्टेशन संचालन नियमों का अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद, टंकण सहित विधिक्षा की गई।
7. जिरीबाम-इम्फाल परियोजना (110.781 कि.मी.) का 27 (सत्ताईस) पीपीटी हिंदी में तैयार किया गया एवं हिंदी प्रेस विज्ञप्ति तैयार की गई।
8. इस महीने उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर/निर्माण श्री पी.के.हीरा द्वारा भेजे गए सार-संग्रह संबंधी 8 (आठ) पृष्ठों का हिंदी अनुवाद किया गया तथा संबंधितों को भेजा गया।
9. श्री राजेश कुमार, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-9 से प्राप्त 16 (सोलह) पृष्ठों का न्यू बंगाईगाँव-गोवालपाड़ा टाउन-कामाख्या दोहरीकरण परियोजना का हिंदी अनुवाद किया गया।
10. निर्माण संगठन में दिनांक 20.09.2022 से 27.09.2022 तक राजभाषा सप्ताह, 2022 मनाया गया। श्री हरि शंकर यादव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 के कर कमलों से इसका शुभारंभ किया गया। इस दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। हिंदी कवि गोष्ठी आयोजित की गयी जिसमें कटिहार के तेलता स्टेशन के स्टेशन अधीक्षक श्री सुधीर कुमार मेहता विशेष रूप से आमंत्रित किए गए थे। श्री प्रेम प्रकाश पांडेय, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-7 की अध्यक्षता में दिनांक 27.09.2022 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति / निर्माण की बैठक आयोजित की गई। इस दौरान विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया तथा संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान विशेष सहयोग प्रदान करने के लिए 2 (दो) अधिकारियों एवं अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य में हिंदी का प्रयोग करने के लिए 5 (पाँच) कर्मचारियों को भी पुरस्कृत कर प्रोत्साहित किया गया।
11. श्री अंशुल गुप्ता, महाप्रबंधक, पूर्वोत्तर सीमा रेल एवं निर्माण संगठन की अध्यक्षता में दिनांक 14.12.2022 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कें.का.-2 की बैठक में श्री राजेश कुमार, मुख्य राजभाषा अधिकारी/ निर्माण, श्री दीपक कुमार गुप्ता, उपमुराधि/निर्माण एवं श्री राजेश रंजन कुमार, राधि/नि. ने भाग लिया।

मैं ऐसा नहीं हूँ

- श्री बिजित गोरा रामसियारी, पिऊन, महाप्रबंधक/नि. प्रकोष्ठ

मैं ऐसा भी बुरा नहीं हूँ, जिसके लिए लोग मुझे इंसान न कहे।
मैं वैसा भी अच्छा नहीं हूँ, जैसा तुम चाहते हो,
सबसे अच्छा नाम देकर पुकारने के लिए,
क्योंकि, मुझे मालूम है...
सबसे अच्छा बनने के लिए
मुझे मौत को गले लगाना पड़ेगा, एक बार नहीं कई बार...
मेरे बाल सफेद होने से पहले, मैं एक लम्बा यात्रा पर निकलूंगा,
अगर मैं किसी भी तरह यात्रा को कामयाब कर पाऊँ,
तो तुम्हें मालूम होगा कि मैं पर्वत की शिखर पर पहुँच गया।
और मानों तुम दूर से ही कोई अजनबी की तरह मुझे देखोगे,
और निश्चित रूप से तुम मेरे अच्छे और बुरे कर्मों को नहीं पहचानोगे।
मुझे वैसा भी नहीं रहना, जैसे ऋण से भरा जीवन को अपने सिर पर उठाकर,
अपने हाथ की रेखाओं को देखकर,
अपना पुराना बंगला एक वेश्या को नहीं बेचना,
क्योंकि मैं अपनी जिंदगी का संध्या समय,
अपने पुराने प्रेमी के खयालों में उसी बंगला में बिताऊंगा।
और उन सारे चेहरों को भूल जाना है - जो मेरे साथ गुजारा था।
और मैं किसी दिन, मेरे अपने पालतु कुत्तों को तुम्हारे हाथ सौंप दुँगा।
और उन सबकी देखभाल के लिए, तुम्हें एक बड़ी जिम्मेदारी उठानी होगी।
सालों लग गए, उन्हें कुछ सार्थक नाम देने के लिए,
मुझे पता है, उनके नखरे और भौंकने को संभालना मुश्किल होगा,
लेकिन, जल्द ही तुमको इसकी आदत हो जाएगी,
जैसे तुम मेरे साथ रहना चाहते हो।
और जल्द ही तुम्हें यह भी मालूम होगा,
वे कितने खाते, सोते और घूमते हैं,
कभी-कभी वे अजनबियों के अलावा, पीछा करते हुए दोस्तों पर भौंकेंगे,
तब उन्हें पट्टा पहनाना भी तुम्हारी ही जिम्मेदारी होगी।
मुझे गुणी कहने या सबसे अच्छा कहने के लिए,
मृत्यु ही एकमात्र ऐसा शब्द है, जिससे मुझे बचना है।
मेरा एक दोस्त नाइट बार में बैठकर शराब की बोतल खत्म करने के बाद,
कहता है - मौत आसान है...
शायद मैं भी कह पाता - जबकि खाली बोतल में जीवन को भरकर,
जिन्दगी से दूर भाग पाते तो...
हाँ! मै सबसे अच्छा इंसान होता, सबसे अच्छा, जैसे तुम चाहते हो...
लेकिन, मैं उतना भी बुरा नहीं, जिसके लिए लोग मुझे इँसान न कहें।

राजभाषा सप्ताह, 2022

प्रथम चित्र में - राजभाषा सप्ताह, 2022 का उद्‍घाटन करते हुए श्री हरि शंकर यादव, मु.प्रशा.अधि./नि.-1

दूसरे चित्र में - अधिकारियों के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता की अध्यक्षता करते हुए श्री हरि शंकर यादव,मु.प्रशा.अधि./नि.-1

पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण संगठन) के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 श्री हरि शंकर यादव के कर-कमलों से मंगलवार, 20 सितम्बर, 2022 को दीप प्रज्वलन कर राजभाषा सप्ताह, 2022 का उद्‍घाटन किया गया। सरस्वती वंदना श्रीमती गोपा लाला, तकनीशीयन के मधुर गायन से संपन्न हुआ। श्री हरि शंकर यादव ने हिंदी दिवस के अवसर पर सभी को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के क्रम में गुजरात के सूरत में माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के कर-कमलों से हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ हुआ है। उन्होंने इस सुअवसर पर उपस्थित सभी अधिकारियों को गृह मंत्रालय से प्राप्त राजभाषा के संवर्धन से संबंधित "**राजभाषा प्रतिज्ञा**" दिलवाई। उन्होंने माननीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी द्‍वारा हिंदी दिवस के अवसर पर दिया गया भाषण पढ़कर उपस्थित सदस्यों को सुनाया। इस मौके पर महोदय ने अपने कर-कमलों से निर्माण संगठन से प्रकाशित होने वाला 56वाँ ई-गृह पत्रिका "**संवाद पत्र**" का विमोचन किया और राजभाषा के इस प्रयास की सराहना करते हुए उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कहा कि इस पत्रिका के प्रकाशन को सशक्त बनाने के लिए विभिन्न विधाओं से संबंधित मूल रचना प्रदान कर अपना सहयोग दें। ऐसा करने से रचनाकारों में हिंदी के प्रति सृजनात्मकता में वृद्‍धि होगी और लेखन कला का विकास होगा। रेल के कामकाज में हिंदी के प्रयोग में तभी वृद्‍धि हो सकती है जब हमें लिखने का अभ्यास हो। उन्होंने राजभाषा विभाग को नई प्रौद्‍योगिकी के मानदंडों का अनुकरण करने का भी सुझाव दिया। आज वही भाषा प्रगति कर सकती है जो प्रौद्‍योगिकी, विज्ञान की भाषा बने। श्री राजेश कुमार, मुख्य इंजीनियर/नि.-9 सह मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि. ने सभी सदस्यों का स्वागत किया। तत्पश्चात अधिकारियों के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता में कुल पाँच समूह बनाए गए थे। जिसमें से प्रथम स्थान "**कपिली एक्सप्रेस**" ग्रुप, द्‍वितीय स्थान "**जन-शताब्दी एक्सप्रेस**" तथा "**मानस राइनो**" ग्रुप ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अंत में श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण द्‍वारा धन्यवाद प्रस्ताव दिया गया तथा सभा समाप्ति की घोषणा की गयी।

राजभाषा सप्ताह, 2022 की झलकियाँ

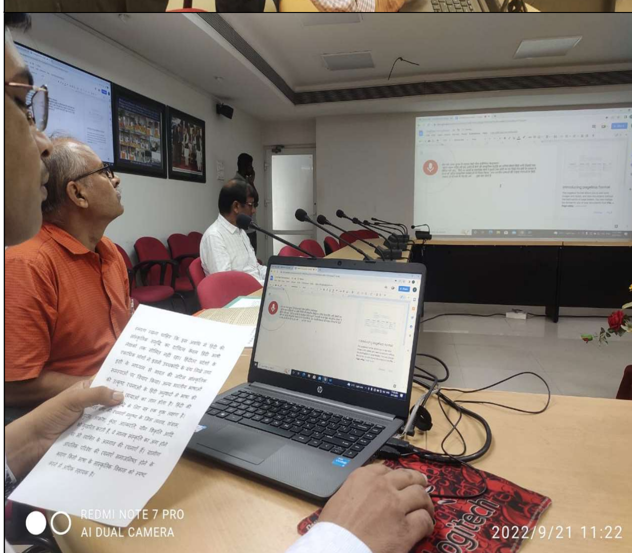

राजभाषा सप्ताह, 2022 में बच्चों द्वारा कविता पाठ

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माण की बैठक एवं राजभाषा सप्ताह, 2022 का समापन

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति/निर्माण की बैठक एवं राजभाषा सप्ताह, 2022 का समापन

पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) के मुख्य इंजीनियर-8 श्री प्रेम प्रकाश पाण्डेय की अध्यक्षता में दिनांक 27.09.2022 को क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसका ऑनलाइन प्रस्तुतीकरण श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने किया। श्री प्रेम प्रकाश पाण्डेय ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के क्रम में 14-15 सितम्बर, 2022 सूरत शहर में गृह मंत्रालय के सौजन्य से माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी द्वारा शुरू किया गया "हिंदी दिवस" आज निर्माण संगठन में राजभाषा सप्ताह की अवधि सफलतापूर्वक पूरी कर समापन किया जा रहा है। श्री पाण्डेय ने संविधान में राजभाषा का दर्जा दिलाने में अहिंदी भाषियों के नाम गिनाते हुए उपस्थित सभी पदाधिकारियों से राजभाषा के प्रयोग-प्रसार में सकारात्मक सहयोग देने की अपील की। उन्होंने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग के लिए अनुकूल वातावरण बनाए जाने पर विशेष बल दिया। निर्माण संगठन से ऑनलाइन प्रकाशित होनेवाली पत्रिका के लिए कर्मचारियों से मूल रचना प्रदान करने पर जोर दिया। श्री पाण्डेय ने ई-ऑफिस, एचआरएमएस एवं ई-पास में हिंदी के प्रयोग पर जोर देते हुए कहा कि इससे नई तकनीक में हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा। इस दौरान कवि गोष्ठी भी आयोजित की गई जिसमें कटिहार के तेलता स्टेशन के स्टेशन अधीक्षक श्री सुधीर कुमार मेहता विशेष रूप से आमंत्रित थे जिनकी हास्य कविता सभी श्रोताओं को लोटपोट कर दिया। इनके अलावा श्री राजेश रंजन कुमार,राजभाषा अधिकारी/नि., श्री कुलदीप तिवारी, सीनि.से.इंजीनियर, श्री अंटूलाल ठाकुर, लेखा सहायक, श्री बिजीत रामचियारी, पिऊन, ने भी अपनी-अपनी कविताओं से सभी को मनोरंजन किया। राजभाषा सप्ताह, 2022 के दौरान अधिकारियों के लिए प्रश्न मंच, अधिकारियों की गूगल हिंदी वॉयस टाइपिंग प्रतियोगिता, कर्मचारियों के लिए प्रश्न मंच, कर्मचारियों की गूगल हिंदी वॉयस टाइपिंग प्रतियोगिता, कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध, वाक्, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन और सुलेख प्रतियोगिता तथा बच्चों की कविता पाठ आयोजित की गई। कवि गोष्ठी के पश्चात् राजभाषा सप्ताह, 2022 के दौरान आयोजित इन विभिन्न प्रतियोगिताओं मे भाग लेकर विजयी प्रतिभागियों को श्री पी.पी.पाण्डे, मुख्य इंजीनियर-8 के कर-कमलों से नकद पुरस्कार के साथ-साथ प्रशस्ति पत्र प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया। इसके अलावा 20 नवम्बर, 2021 को आयोजित संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान उत्कृष्ट सहयोग प्रदान करने वाले 2(दो) अधिकारियों श्री अभिजीत मजुमदार, उप मुख्य इंजीनियर/नि. अभिकल्प-2 तथा श्री महावीर सिंह, उप वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखाधिकारी/निर्माण को विशेष रूप में सम्मानित किया गया। इसके अलावा वर्ष भर अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य के दौरान हिंदी मे करने के प्रति विशेष रूचि रखने वाले 5(पाँच) कर्मचारियों को उनके कार्यनिष्पादन के आधार पर सम्मानित किया गया। उक्त समारोह में श्री एस.के.सहगल, प्रमुख मुख्य भण्डार प्रबंधक/नि., श्री हरकेश मीना, वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखाधिकारी/नि.-2, श्री धीरेन्द्र राय, सहायक कार्यपालक इंजीनियर/नि., श्री अचल कुमार सिंह, सहायक कार्यपालक इंजीनियर/नि. विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन तथा अंत में धन्यवाद प्रस्ताव श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने किया।

पहाड़ का इंजीनियर

-- श्री विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर (निर्माण)-7

पक्का इरादा, बुलंद हौसला, कठिन परिश्रम करता है।
पहाड़ पर लाइन बनाने से पहले, इंजीनियर खुद पहाड़ बनता है।
कुतुब मिनार से दुगना ऊँचा पुल, क्या यूँ ही बन जाता है।
घुमावदार सुरंगों से रास्ता, क्या यूँ ही निकल आता है।
पहाड़ का रास्ता, जिंदगी सा, चढ़ता उतरता चढ़ता है।
यहाँ सिर्फ इंजीनियर ही नहीं, पहाड़ भी फिसलता है।
लैंडस्लाइड का डर कितना डराता है।
हाथ पाँव नहीं टूटते, इंजीनियर जान गँवाता है।
इरादा अडिग रख, हर पल आगे बढ़ता है।
इंजीनियर अपना दिल पहाड़ करता है।
इंजीनियर की पत्नी भी, पहाड़ होती है।
बेचारी कितनी रातें, अकेले सोती है।
पहाड़ में मोबाइल नेटवर्क कहाँ आता है।
पति बस पहाड़ में गुम हो जाता है।
कमर कस, वो झांसी की रानी बन जाती है।
पति का रॉल भी घर में, खुद निभाती है।
जानती है उसका पति, बड़ा काम कर रहा है।
रेल का, देश का निर्माण कर रहा है।
ये सौभाग्य आखिर, कितने को मिल पाता है।
यहाँ हर कोई कहाँ, पहाड़ पर लाइन बिछाता है।
इंजीनियर के बच्चे भी, तो पहाड़ होते हैं।
अपना होमवर्क खुद कर, बेफिक्र सोते हैं।
अपनी उम्र से जल्दी, बड़े हो जाते हैं।
अपनी माँ का हाथ बँटाते हैं।
जल्दी घर आ जाओ पापा, बेटा फोन नहीं करता है।
वो भी समझदार है, सब समझता है।
पापा की मदद के लिए, सब प्रयास करता है।
सारा काम खुद कर, पापा को फ्री रखता है।
पहाड़ पर लाइन बनाना, सचमुच बड़ा काम है।
इसमें सबका, सचमुच बड़ा योगदान है।
सबके सहयोग से, जोश आ जाता है।
पहाड़ का इंजीनियर, खुद पहाड़ बन जाता है।
पहाड़ का इंजीनियर, खुद पहाड़ बन जाता है।

****

हिंदी कार्यशालाएँ

[मंगलवार से शुक्रवार तक तथा सोमवार] **[दिनांक 01.11.2022 से 07.11.2022 तक]**

हिंदी कार्याशालाओँ का विवरण इस प्रकार है :--

महाप्रबंधक (निर्माण) कार्यालय के राजभाषा विभाग द्वारा मंगलवार दिनांक 01.11.2022 से सोमवार दिनांक 07.11.2022 तक कुल 05 (पाँच) दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इन हिंदी कार्याशालाओं में निर्माण संगठन के विभिन्न विभागों के कुल 30 (तीस) कर्मचारियों ने भाग लिया। इन कार्याशालाओं में व्याख्यान देने के लिए गृह मंत्रालय के श्री कोमल कुमार सिंह, उप निदेशक / हिंदी प्रशिक्षण योजना, (पूर्वोत्तर) मालीगाँव, श्री निपन बरदोलई, हिंदी प्राध्यापक, गृह मंत्रालय, श्रीमती शर्मिला ताई, हिंदी प्राध्यापिका, गृह मंत्रालय, श्री सहदेव सिंह पुरती, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, पू.सी.रेल/मालीगाँव एवं श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने व्याख्यान दिया। इन कार्यशालाओँ में "प्रशासनिक शब्दावली के प्रयोग" विषय पर व्याख्यान दिए गए।

पूर्वोत्तर सीमा रेल निर्माण संगठन में "भू-स्खलन" पर हिंदी में तकनीकी संगोष्ठी

श्री हरि शंकर यादव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 की अध्यक्षता में पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण)/मालीगाँव द्वारा दिनांक 07.11.2022 को हिंदी माध्यम से **"भू-स्खलन"** विषय पर विशेष तकनीकी संगोष्ठी आयोजित की गयी। उक्त तकनीकी संगोष्ठी में श्री के.के.अग्रवाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-2, श्री कौशल किशोर, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-3, श्री राजेश कुमार, मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण, श्री विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-7, श्री दीपक कुमार गुप्ता, उप मुख्य राजभाषा अधिकीरी/निर्माण के अलावा सभी विभागाध्यक्ष तथा निर्माण संगठन के उप मुख्य इंजीनियर, कार्यपालक इंजीनियर और सहायक कार्यपालक इंजीनियर उपस्थित थे। श्री हरि शंकर यादव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 ने कहा कि इस तकनीकी संगोष्ठी में हिंदी माध्यम से अपने विचारों के आदान-प्रदान का मुख्य उद्येश्य यह है कि निर्माण संगठन में राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार कर भारत सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित की जा सके। तकनीकी संगोष्ठी हमारे तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में हुए अद्यतन एवं क्रमागत उन्नति से अवगत कराता है। किसी भी तकनीकी समस्या का नए ढंग से समाधान के लिए ऐसी तकनीकी संगोष्ठी महत्वपूर्ण है। इस संगोष्ठी के आयोजन का मुख्य उद्येश्य यह है कि पूर्वोत्तर के दूर-दराज के इलाकों में रेलपथ निर्माण के दौरान होने वाली **"भूस्खलन"** के कारण उभर कर आने वाली कठिनाइयों को दूर करते हुए तथा समय और लागत में कमी लाते हुए निर्माण कार्य को अबाध रूप से आगे बढ़ाना है। खासकर, पूर्वोत्तर के सभी राज्यों की राजधानियों को जोड़ने के दौरान दुर्गम पहाड़ी और घाटियों के बीच रेल संरचना संबंधी निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने के क्रम में होने वाले भूस्खलन जैसे कठिनाइयों और समस्याओं के समाधान के रूप में यह तकनीकी संगोष्ठी अत्यंत लाभप्रद साबित होगा। चूँकि, रेलवे भारत को जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है, जिससे यह भारत की आर्थिक उन्नति के साथ-साथ सामाजिक उत्थान में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। अत: इसके सामने आनेवाली जो भी कठिनाइयाँ हैं उन्हें दूर करना अत्यंत आवश्यक है। इनमें से **"भूस्खलन"** आज चर्चा का प्रमुख विषय है। श्री विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-7 ने **"भूस्खलन"** विषय पर अपना

ऑनलाइन प्रस्तुतीकरण रखते हुए उपस्थित सभी अधिकारियों के बीच अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया जिस पर हिंदी माध्यम से महत्वपूर्ण चर्चा की गयी। इसके अलावा श्री विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-7 ने अपनी स्वरचित कविता जिसका शीर्षक **"पहाड़ का इंजीनियर"** है प्रस्तुत किया जिसकी सभी ने प्रशंसा की। श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने तकनीकी गोष्ठी का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

श्री हरि शंकर यादव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 तकनीकी संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए एवं श्री विक्रम गुप्ता, मुख्या इंजीनियर/निर्माण-7 भू-स्खलन विषय पर हिंदी में व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए।

तकनीक का प्रयोग बुद्धिमानी से करेंगे तो सबको खुशहाली देगा,
परन्तु इसका प्रयोग क्रोध और नफरत में करोगे तो तबाही देगा।
--- अज्ञात

सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2022

31 अक्टूबर से 06 नवम्बर, 2022

महाप्रबंधक (निर्माण) कार्यालय के मुख्य भवन एवं उप भवन के मध्य स्थित परिसर में 31 अक्टूबर, 2022 से 06 नवम्बर, 2022 के बीच मनाए जाने वाले सतर्कता सप्ताह, 2022 के क्रम में शुक्रवार दिनांक 04.11.2022 को 12:30 बजे श्री बलदेव सिंह, मुख्य सतर्कता अधिकारी पू.सी.रेल तथा श्री अभिजीत राय, मुख्य इंजीनियर / निर्माण-1 सह मुख्य कार्मिक अधिकारी / निर्माण के सहयोग से "भ्रष्टाचार मुक्त भारत विकसित भारत" के उद्येश्य के लिए "भ्रष्टासूर" नामक एक नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया। इस नुक्कड़ नाटक के मंचन में भाग लेने वाले कलाकार इस प्रकार हैं - 1. श्री विपुल बोरा, मुख्य कार्यालय अधीक्षक (लेखा)/ पू.सी.रेल, 2. श्रीमती आलुमिता विश्वास, मुख्य कार्यालय अधीक्षक (सिगनल)/ पू.सी.रेल, 3. श्री किशोर पाठक, मुख्य कार्यालय अधीक्षक (कार्मिक)/ पू.सी.रेल, 4. श्री निखिल बर्मन, मुख्य कार्यालय अधीक्षक (दावा)/ पू.सी.रेल, 5. श्री विजय दास, कार्यालय अधीक्षक (कार्य)/ पू.सी.रेल, 6. श्री मंटू कुमार दास, कार्यालय अधीक्षक (कार्मिक)/ पू.सी.रेल, 7. श्री रूपम काकति, कार्यालय अधीक्षक (कार्मिक)/ पू.सी.रेल 8. श्री देव कुमार रांगसा, तकनीशीयन (सगामाडि)/ गुवाहाटी, पू.सी.रेल, 9. श्री दीप चंद बरूआ, तकनीशीयन (सगामाडि)/ गुवाहाटी, पू.सी.रेल, 10. श्रीमती अनंदिता दास, पीजीटी शिक्षिका, रेलवे हाई स्कूल, मालीगाँव।

भ्रष्टाचार को पकड़ना बहुत कठिन काम है, लेकिन मैं पूरे जोर के साथ कहता हूँ कि यदि हम इस समस्या से गंभीरता और दृढ़ संकल्प के साथ नहीं निपटते तो हम अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने में असफल होंगे।

--- स्व. लाल बहादुर शास्त्री

एक विकल्प यह भी

-- श्री विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर/नि.-7

रेलवे 60 वर्ष की आयु में आपको भले ही रिटायर कर दे परन्तु आधुनिक सुख सुविधाओं व उन्नत चिकित्सा प्रणाली के कारण 60 वर्ष की आयु में भी आप काफी स्वस्थ व उर्जावान रहते हैं। 24 घंटे पत्नी के साथ घर पर समय गुजारना एक अत्यंत कठिन कार्य है। अत: आप फिर से नौकरी शुरू कर देते हैं। प्राइवेट कंपनी आपको चाहै कुछ भी वेतन या पोस्ट दे पर वह आपकी उस पद गरिमा की बराबरी नहीं कर सकती जहाँ से आप रिटायर हुए हैं। प्राइवेट कंपनी का उद्येश्य आपके कार्यदक्षता के बजाए आपके प्रभाव का इस्तेमाल करने में अधिक रहता है। आपको पग-पग पर समझौता करना पड़ता है। कभी-बार आपको उन कनिष्ठ अधिकारियों के कमरे में जाना पड़ता है जिन्हें अपने सेवा काल में आपने कई बार अपने कमरे से बाहर निकाला था।

अपना खुद का नया कारोबार शुरू करना भी इस उम्र में खतरनाक हो सकता है। पता लगा जिन्दगी की सारी गाढ़ी कमाई डूब गयी। अत: तलाश है एक ऐसे रोजगार की जिसमें मान हो, सम्मान हो, रिस्क फ्री हो व ज्यादा पूंजी की भी आवश्यकता न हो। कमाई भले ही ज्यादा न हो परन्तु वक्त अच्छा गुजरे। चलिए मैं आपको आज एक ऐसा ही एक सुंदर विकल्प बताता हूँ।

आज के युवा की जिन्दगी में तनाव ही तनाव। उसकी इच्छाएँ असीमित हैं। वह कुछ पाना चाहता है। बस भाग रहा है, कहाँ जाना है मालूम नहीं। चूँकि, सब दौड़ रहे हैं वह भी दौड़ रहा है। जिन्दगी की रेस में वह सबसे तेज दौड़ना चाहता है। जिन्दगी से जो भी पूरी तरह उलझनों व तनाव में घिरी हुई है। अत: तनावग्रस्त युवा का एक बहुत बड़ा बाजार उपलब्ध है। इस बाजार की तरफ ध्यान दें। पुण्य का कार्य करें व भटके हुए युवा को राह दिखाएँ। आधुनिक गुरू बनकर इस बाजार में कदम रखें, सफलता आपके कदम चूमेगी।

आजकल विश्व में आध्यात्मिक गुरूओं की भरमार है। 20 चैनलों पर 21 बाबा/गुरू आपको प्रवचन देते हुए मिल जाएँगे परन्तु यहाँ आपस में कोई कॉम्पिटिशन नहीं है। सबका अपना एक अलग फैन फेयर बेस है। आज के तनावपूर्ण युग में इसकी सर्वाधिक आवश्यकता है। आधुनिक आध्यात्मिक गुरू बनने की विधि बहुत ही सरल है। इस संपूर्ण विधि को विस्तारपूर्वक समझे जो इस प्रकार है।

1. सर्वप्रथम आप यह बिना किसी संशय के मान लें कि पिछले जन्म में आप एक बहुत बड़े योगी थे। आपको ध्यान, योग व प्राणायाम आदि का अखंड ज्ञान है। अभी-अभी ये लेख पढ़ते हुए आपका तीसरा चक्षु खुल गया है व आपको जन्म-जन्मांतर के सारे राज मालूम हो गए हैं। यह सब मानना अति आवश्यक है क्योंकि जैसा आप सोचते हैं आप आस-पास की दुनिया भी वैसा ही सोचने लगती है।

2. बाजार में उपलब्ध बुद्धा से लेकर श्री श्री रविशंकर जी की पुस्तकों का गहन अध्ययन शुरू कर दें। कट पेस्ट का भरपूर लाभ उठाते हुए एक दो नई पुस्तकों को जन्म दें। अपनी एक दो ऑडियो /

वीडियो / सीडी / डीवीडी बनाएँ। किसी भी धर्म, जाति, वर्ण आदि में खुद को सीमित न करें। आप सब के हैं व सब आपके हैं।

3. आप ध्यान (मेडिटेशन), योगा, प्राणायाम, स्वास्थ्य, आहार आदि के विषय में बात करें। ये सब अच्छी बातें हैं व सब के लिए अच्छी हैं। थोड़ा ध्यान, थोड़ा योगा व प्राणायाम को मिलाकर अपना एक तकरीबन आधे घंटे का कैप्सूल कोर्स बनाएँ व लोगों को सिखाएँ। इसे आप कोई चमत्कारी नाम दें जैसे "महानिरोग मंत्र," "महासंजीवनी क्रिया," "अमृत क्रिया" आदि।

4. अपनी वेषभूषा पर ध्यान दें। कुछ थोड़ा अलग, जो लोगों की नजर में आए, उसे नियमपूर्वक पहनना शुरू कर दें। अपने कपड़ों, स्टाइल इत्यादि से अपनी पहचान बनाएँ।

5. इस देश में अपने नाम के आगे श्री श्री या भगवान शब्द स्वयं ही लगाने पड़ते हैं, अत: जैसा उचित लगे अपने नाम का विस्तार करें। एक छोटा उपनाम जैसे गुरुजी, सद्गुरुजी, बाबूजी, महाराज जी आदि अवश्य रख लें ताकि लोग आपको श्रद्धापूर्वक बुला सकें।

6. थोड़ा रहस्यमयी बनें व अपने आस-पास का वातावरण भी रहस्यमयी बनाएँ। अपने पिछले जन्मों पर कुछ अच्छी कहानियाँ तैयार करें व इसका अत्यधिक प्रचार करवाएँ। पुनर्जन्म से आप अपनी आत्मा की श्रेष्ठता साबित कर सकते हैं। "गीता" में दिए गए ज्ञान रे सहारे आप आत्मा पर विस्तार से प्रवचन दे सकते हैं।

7. अपने इर्द-गिर्द स्वंयसेवकों (Volunteers) का एक समूह खड़ा करें। इनका होना अति आवश्यक है। ये ना केवल आपके लिए नि:शुल्क कार्य करेंगे, अपितु तन, मन, धन से आपका प्रचार भी करेंगे व भीड़ जुटाएँगे। आप चाहें तो अपने स्वयंसेवकों को एक पहचान जैसे कोई आई कार्ड, अंगूठी, टोपी, माला आदि भी दे सकते हैं जिससे इन्हें अपनी एक अलग पहचान महसूस हो व आपको छोड़ कर भी न जाएँ।

8. किसी समाज सेवा / सामाजिक कार्य जैसे वृक्षारोपण, अनाथ आश्रम, शिक्षा अभियान आदि से स्वयं को जोड़ें, इससे आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

9. अपना एक डोनेशन (दान) अकाउंट बनाएँ व आयकर विभाग से इसके लिए रिबेट लें। लोगों को अपनी आय का कुछ प्रतिशत (जैसे 5%) प्रतिमाह दान करने के लिए प्रोत्साहित करें।

10. आजकल सोशल मीडिया का जमाना है, अपनी एक अच्छी वेबसाइट, फेसबुक पेज इत्यादि बनाएँ।

11. किसी भी राजनीतिक दल से जुड़ने का प्रयास कदापि न करें। सभी राजनीतिक दल क्षणभंगुर हैं परंतु आप तो अजर अमर हैं।

12. शाकाहारी बनें व लोगों को शाकाहार सिखाएँ।

13. किसी मनोरम स्थल पर अपना एक आश्रम खोलें। अगर संभव हो तो वदेश (खासतौर पर अमेरिका) में भी एक आश्रम खोलें। एक बार विदेशी भक्त आना शुरू हो जाएँ तो धन के अभाव से मुक्ति मिल जाती है।

14. कुछ दो य तीन दिन के आध्यात्मकि कार्यक्रम शुरू करें। कार्यक्रम का शुल्क कम रखें ताकि अधिक से अधिक लोग जुड़ सकें। जहाँ तक आय की बात है, वह तो किताबों, सीडी, डीवीडी वगैरह बेच कर की जा सकती है। ध्यान रखें यह नंबर गेम (Number Game) है, अत: संख्या बढ़ाना अति आवश्यक है। अगर धंधा चल निकले तो कुछ दिनों बाद साबुन, शहद, शैंपू, अगरबत्ती इत्यादि भी बेचे जा सकते हैं।

15. पुनर्जन्म के बारे में खूब कहानी किस्से सुनाएँ, कल्पनाएँ करना सब को रूचता है।

16. आप चाहें तो आध्यात्मिक टूरिस्म (Spiritual Walks) भी शुरू कर सकते हैं।

17. भगवान, ईश्वर, अल्लाह, गॉड सब को स्वीकार करें व परमपिता मानें परंतु भूल कर भी किसी एक से खुद को न जोड़े सबका बराबर सम्मान करें।

18. अगर किसी टीवी चैनल से साठगाँठ कर सकें तो यह अतिउत्तम है। हमारे देश में बाबा रामदेव को केवल आस्था चैनल ही पैदा कर सकता है।

बेफिक्र रहें, घबराएँ नहीं। किसी किस्म का संकोच न करें। यह सनातन कार्य जन्म जन्मांतर से चला

आ रहा है। किसी प्रकार की शर्म, दोष (guilt) बिल्कुल भी महसूस न करें। आप एक महान कार्य की ओर अग्रसर है। आप आज के युवा को तनावमुक्त करने जा रहे हैं।

क्या कहा, “आप असली आध्यात्मिक पुरूष/गुरु नहीं है, यह विश्वासघात है”। जी बिल्कुल नहीं। आजकल के आध्यात्मिक गुरुओं में कौन आपको असली लगता है। सब बिल्कुल आप जैसे हैं। यह

कोई धोखा या फरेब नहीं हैं। आप लोगों को ध्यान, योगा व प्राणायाम सिखा रहे हैं। ये सभी अच्छी चीजें हैं। सभी आध्यात्मिक गरुओं ने सदा मानवाता का भला ही किया है। अवसाद से बाहर निकाल कर आशा का मार्ग दिखाया है। मानवता के कल्याण में अपना योगदान दें। यह पृथ्वी आपके इस

महान कार्य की सदा ऋणी रहेगी। हमारी 24x7 नि:शुल्क सेवा सदा आप की सहायता के लिए उपलब्ध है। संपूर्ण ऊर्जा से आगे बढ़ें। हार्दिक शुभकामनाएँ।

नोट:- अगर आपके लिए 60 का आँकड़ा पार करने में कुछ समय है तो यह और भी अच्छा है क्योंकि आप अभी से काम शुरु कर सकते हैं व पूर्ण तैयारी के साथ मैदान में उतर सकते हैं।

-- श्री अंटु लाल ठाकुर, लेखा सहायक/नि./मालीगाँव

मैं वह भारत हूँ जिसने पिछले पाँच हजार वर्ष में कभी भी अपने किसी बेटे का नाम दुशासन नहीं रखा, क्योंकि उसने एक स्त्री का अपमान किया था।

मैं वह भारत हूँ जो कभी भी अपने बच्चों को रावण का नाम नहीं देता, क्योंकि इन्होंने अपने जीवन में स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार किया था।

मैं वह भारत हूँ जहाँ 99 प्रतिशत बलात्कारियों को अपना गाँव छोड़ देना पड़ता है और उसे धक्का कोई और नहीं खुद उसके खानदान वाले देते हैं।

मैं वह भारत हूँ जहाँ गुस्सा आने पर सामान्य बाप बेटे को भले लात से मार दे पर बेटी को थप्पड़ नहीं मारता।

मैं वह भारत हूँ जहाँ अब भी बेटियाँ लक्ष्मी होती है।

मैं वह भारत हूँ जहाँ एक सामान्य बाप अपने जीवन की कमाई अपनी बेटी के लिए सुखी संसार रचने में खर्च कर देता है।

मैं वह भारत हूँ जहाँ एक बेटा बाप के हृदय में बसता है और बेटियाँ उसकी आत्मा में बसती है।

मैं वह भारत हूँ जिसके सौ करोड़ बच्चे अब भी मर्यादा की लकीर नहीं लांघते क्योंकि उनके हृदय में बसते हैं राम, कृष्ण और शिव। उनके बीच निर्भय होकर मुस्कुराती हैं कोई राधा, कोई मीरा, कोई अनुसुइया।

सभ्यता में असभ्यता के संक्रमण से उपजी आधुनिक कुरीतियों ने बेटियों के जन्म पर उपजने वाले उल्लास का रंग भले मार दिया हो, पर अब भी माता-पिता अपनी बेटी की मुस्कान देख कर ही सर्वाधिक खुश होता है।

“ई ऑफिस” - कागज रहित कार्यालय समाधान (सॉल्यूशन)

--- श्रीमती रेखामोनी चुतिया, सहा. सिग.एवं दूर सं.इंजी./नि./मालीगाँव

कार्य तेज, विवेकपूर्ण और मितव्ययी हो - कागज बचाएँ - हरियाली लाएँ।

ई-ऑफिस राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (एनआईसी) द्वारा विकसित एक क्लाउड सक्षम सॉफ्टवेयर अनुप्रयोग है जिसे तीन स्तरीय अपटाइम यूएसए द्वारा प्रमाणित आँकड़े हमारे सिकंदराबाद और गुरूग्राम केन्द्रों पर होस्ट किया गया है।

ई-ऑफिस एक वर्कफ्लो आधारित प्रणाली है जो फाइलों के मौजूदा मैनुअल हैंडलिंग को अधिक कुशल इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली में बदल देती है। इस प्रणाली में सभी चरण शामिल हैं, जिसमें आवक पत्राचार का इलेक्ट्रॉनिक डायरीकरण, फाइलों का निर्माण, पत्राचार और फाइलों की आवाजाही, डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाण पत्र (डीएससी) का उपयोग करके टिप्पणी व प्रारूप पर इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर करना, ई-साइन और अंत में अभिलेखों के संग्रह शामिल हैं।

हम ई-ऑफिस कार्यान्वयन सेवा प्रदान करते हैं जिसमें योजना बनाने से लेकर चालू करने तक तथा उपयोगकर्ताओं को प्रशिक्षण और उनके कार्य में सहयोग प्रदान करना शामिल है ताकि कार्यालय के फाइलों और दस्तावेजों का प्रबंधन करने के लिए एक सुरक्षित और प्रभावी तरीका स्थापित करके मैन्युअल कार्यस्थल से डिजिटल कार्यस्थल में एक समेकित पारगमन सुनिश्चित किया जा सके। ई-ऑफिस एक प्रभावी वर्क फ्रॉम

होम सामाधान भी है क्योंकि वीपीएन कनेक्शन के माध्यम से डिजिटल फाइलों तक कहीं से भी और कभी भी पहुँचा जा सकता है।

रेलनेट के पास भारतीय रेल के लिए एनआईसी ई-ऑफिस के सबसे बड़े एंड-टू-एंड रॉल-आउट (डेटा सेंटर होस्टिंग, बैंडविड्थ कनेक्टिविटी, प्रशिक्षण और विविध सेवाओं) को लागू करने का अनुभव है। हमने देश भर में भारतीय रेल के 235 से अधिक प्रतिष्ठानों में ई-ऑफिस प्रदान किया है और 1.42 लाख से अधिक उपयोगकर्ताओं को जोड़ा है।

हम 20 से अधिक सरकारी / पीएसयू संगठनों जैसे - इरकॉन, मिधानी, हुडको सीडब्ल्यूसी, डीएफसीसी आईएल, आईआरसीटीसी, आरवीएनएल, जेई आदि को ई-ऑफिस होस्टिंग सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं।

ई-ऑफिस - परिणामानुकूल

फाइल प्रबंधन प्रणाली (ई-फाइल)	हाँ	-	-	हाँ
ज्ञान प्रबंधन प्रणाली (केएमएस)	हाँ	-	हाँ	हाँ
सहयोग एवं सूचना सेवा (सीएएमएस)	हाँ	-	हाँ	हाँ
अवकाश प्रबंधन प्रणाली (ई-लीव)	-	-	हाँ	हाँ
दौरा प्रबंधन प्रणाली (ई-टूअर)	-	-	हाँ	हाँ
व्यक्तिगत सूचना प्रबंधन प्रणाली (पीआइएमएस)	हाँ	es	हाँ	हाँ
संपत्ति वापसी सूचना प्रणाली प्रबंधन (पीआरआइएसएम)	-	हाँ	-	हाँ
स्मार्ट परफॉर्मेंस एप्राइजल रिकॉर्डिंग ऑनलाइन विंडो (स्पैरो)	-	हाँ	-	हाँ

https://nfr.eoffice.railnet.gov.in पर लॉग इन करें। तत्पश्चात् एनआइसी मेल आइडी एवं पासवर्ड डालें। उसके बाद - 1. फाइल प्रबंधन प्रणाली पर जाएँ, 2. रिसिप्ट पर जाएँ, 3. ब्राउज और डायरी करें, 4. पीडीएफ पत्र को अपलोड करें तथा विवरण को भरें और जेनरेट करें। इस पत्र को भेजने के लिए सेंड पर क्लिक करें और संबंधित कार्यालय का नाम टाइप करें - पुट अप इन करने के लिए पुट इन ए फाइल पर क्लिक करें - फाइल का चयन (सिलेक्ट) करें - ग्रीन नोट खोलें और आवश्यकतानुसार टिप्पणी टाइप करें - संबंधित व्यक्ति के पास भेज दें।

मै हिंदी का प्रेमी हूँ। सांस्कृतिक जीवन में हिंदी के महत्व को भली-भाँति समझता हूँ। भारतीय एकता का मुख्य साधन हिंदी ही बन चुकी है। इसलिए भारत राष्ट्र के विरोधी हिंदी के विरोध में अपनी शक्ति का प्रयोग कर रहे हैं।

- डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्या

गलतियाँ

-- श्री विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर/नि.-7

गलती आदमी से ही होती है। कहते हैं आदमी गलतियों का पुतला है। यह भी कहते हैं कि आदमी और मशीन में एक ही फर्क है कि मशीन कभी गलती नहीं करती, पर आदमी वही है जो गलती करता है। अगर आदमी गलती ना करें तो वह मशीन बन जाएगा।

पर गलतियां भी दो प्रकार की होती हैं। एक वह जिन्हें भविष्य में सुधारा जा सकता है। मेरे पिताजी कहते हैं कि पहली गलती तो सबसे होती है। बेवकूफ/बुद्धू लोग वह होते हैं जो एक ही गलती बार-बार करते हैं। अतः वह गलतियां जो एक बार करने के बाद, दूसरी बार में सुधारी जा सकती हैं, आपका विकास करती है, आपको दुनियादारी सिखाती हैं, आपको समझदार बनाती हैं, आपको जीवन के सच्चे सबक सिखाती हैं, आपको निखारती है। जैसे सोने को ठोक पीटकर चमकाया जाता है वैसे ही ऐसी गलतियों से सबक ले लेकर आप सोने जैसे निखर जाते हैं।

परंतु कुछ गलतियां ऐसी होती हैं जिन्हें सुधारने का दूसरा मौका कभी नहीं मिलता है। वह काम जिंदगी में बस एक बार ही करना होता है, एक बार गलती हो गयी, सारी जिंदगी की परेशानी। सुधारें कैसे? दोबारा वह काम करने का मौका है ही कहाँ। आप ऐसी गलतियों के बारे में अपने दोस्तों को, छोटे भाई बहनों को ज्ञान दे सकते हैं, परंतु आपने अपनी जिंदगी में जो कर लिया उसका अब क्या किया जा सकता है। ऐसी ही एक गलती मैंने भी जिंदगी में की जिसकी सजा मैं हर पल भुगतता रहता हूं।

मैं IIT में पढ़ता था। वह भी IIT में पढ़ती थी। IIT ने मुझे समझदार बना दिया था। IIT ने उसे भी समझदार बना दिया था। मैं दुनिया को अपने चश्मे से देखता था वह भी दुनिया को अपने चश्मे से देखती थी।

मेरा चश्मा मोटा था। उसका चश्मा भी मोटा था। हम दोनों के चश्मे अलग-अलग थे इसलिए दोनों के जिंदगी के प्रति नजरीये भी अलग-अलग थे। हम दोनों जवान थे। हमारे Harmones active थे। खेल खेल में कभी कभी एक दूसरे के चश्मे से भी जिंदगी को देखते थे। देखते देखते प्यार हो गया। प्यार तो अंधा होता है। हमें अपने चश्मे दिखाई देने बंद हो गए। प्यार में शादी हो गई। आज हमारे दो बच्चे हैं।

अब जवानी खत्म हो चुकी हैं। Harmones ज्यादा active नहीं है। चेहरे पर बुढ़ापे की झलक है। शरीर काफी Stiff हो चुका है। हम दोनों बस अपना-अपना चश्मा इस्तेमाल करते हैं। एक दूसरे का चश्मा बिल्कुल टच नहीं करते। हमें केवल और केवल अपना चश्मा पसंद है।

मैं पढ़ा लिखा समझदार हूं। (IIT Product) मैं जानता हूं मेरा चश्मा ही correct चश्मा है।

मेरी पत्नी भी समझदार हैं। (IIT Product), वह जानती है कि उसका चश्मा ही correct चश्मा है। जिंदगी की हर छोटी मोटी बात को हम अपने अपने चश्मे से देखते हैं। दोनों का चश्मा (prospective) इतना अलग है कि एक चश्मे से जिंदगी का गिलास केवल आधा भरा हुआ होता है और दूसरे के चश्मे (prospective) से केवल आधा खाली। चश्मा बदलने को भी तैयार नहीं है क्योंकि दोनों IIT Product हैं।

मैं कभी-कभी सोचता हूं कि काश मेरी पत्नी के पास चश्मा नहीं होता। वह दुनिया को सिर्फ मेरे चश्मे से देखती। तब हम दोनों को दुनिया एक जैसी दिखाई देती। और अगर दोनों को दुनिया एक जैसी दिखाई देती तो फिर arrguments कहां से होते। अगर arrguments नहीं होते तो बहस कैसे होती, बहस नहीं होती तो हम कैसे लड़ते, हम नहीं लड़ते तो क्या करते, प्यार करते।

मेरे एक Cousin brother ने अभी थोड़े दिन पहले पूछा कि भैया शादी के लिए कैसी लड़की Select करनी चाहिए। मैंने कहा की सबसे पहली बात है कि लड़की बला की खूबसूरत होनी चाहिए। आपके दोस्त देखें और जल के मर जाए, ऐसा लगना चाहिए कि लंगूर के हाथ हूर लग गई है। देखते ही गजल गाने का मन करें। उसकी एक नजर आपको दीवाना बना दे। आपके सारे Harmones एक सेकंड में active हो जाएं।

परंतु पहली बात से ज्यादा Important दूसरी बात यह है कि उसके पास अपना चश्मा नहीं होना चाहिए। परंतु आजकल अनपढ़ लड़कियों का अकाल है। अतः कोशिश करो चश्मा पतले से पतला हो। 10वीं फेल, 12वीं फेल। अगर यह भी ना मिले तो बी.ए., बी.कॉम से काम चला लेना, पर ये Science वाली लड़कियों का चश्मा बहुत Logical होता है। भैया यह गुनाह कभी मत करना। अगर गलती से IIT वाला चश्मा मिल गया तो पूरी जिंदगी भारत-पाक युद्ध की गारंटी मैं दे सकता हूँ।

ईश्वर! क्या आप मेरी इस एक गलती को सुधारने का एक मौका मुझे इसी जन्म में नहीं दे सकते। माना मैं भारत में पैदा हुआ हूं, हमारी संस्कृति इसका मौका नहीं देती, परंतु आपकी माया तो अपरम्पार है। कृपया इस भक्त पर कुछ तो स्नेह दिखाएं। इस गलती को सुधारने का एक, बस केवल एक मौका दें। मैं हर बुधवार सवा रूपए का प्रसाद चढ़ाऊंगा।

गलती जीवन का एक पन्ना है, पर रिश्ते जिंदगी की किताब है। जरूरत पड़ने पर गलती का एक पन्ना फाड़ देना, पर एक पन्ने के लिए पूरी किताब मत खो देना।

पहले और अब

- राजेश रंजन कुमार, राजभाषा
अधिकारी/निर्माण

पहले कितना हँसमुख लगता था, अब कैसा हंस मुख लगता हूँ।
पहले विद्यालय पढ़ने जाता था, अब घर में भी पढना पड़ता है।
पहले बच्चों संग खेलता था, अब तो बच्चों को खेलाना पड़ता है।
पहले बाहरवाली को पानी पिलाता था, अब घरवाली पानी पिलाती है।
पहले आँखें चार हुआ करती थीं, अब आँखे चार करना पड़ता है।
पहले मैं कसरत करता था, अब तो मुझे कसरत करना पड़ता है।
पहले पसीना मेरा बहता था, अब तो मुछे पसीना बहाना पड़ता है।
पहले मैं खुल कर पढ़ता था, अब तो खोल कर पढ़ना पड़ता है।
पहले तो स्वयं सौदा आता था, अब तो मुझे सौदा लाना पड़ता है।
पहले मैं बाजार में घुमता था, अब बाजार घुमाने जाना पड़ता है।
पहले मैं झूठ ही बोला करता था, अब सच-सच बोलना पड़ता है।
पहले मैं नाटक करवाता था, अब तो मुझे नाटक करना पड़ता है।
पहले जीवन खुद चलता था, अब तो जीवन चलाना पड़ता है।
पहले मैं दिन को दिन और रात को रात ही कहा करता था।
अब तो मुछे रात को दिन और दिन को रात कहना पड़ता है।
पहले अपना दिमाग चलता था, अब मेरे लिए दिमाग चलती है।
पहले मैं गबरू जवान लगता था, अब तो गोबर जवान लगता हूँ।
पहले दूसरे को देख हँसता था, अब लोग मुझे देख कर हँसते हैं।
पहले मैं बढ़िया सा सूट पहनता था, अब मैं सूट हुआ करता हूँ।
पहले मैं चिंतामुक्त रहता था, अब तो मैं चितायुक्त रहता हूँ।
पहले मैं सचमुच राजेश था, अब तो इस राज का इस्स हो गया।

****

हम वर्तमान में जीते हैं, भविष्य के सपने देखते हैं और भूतकाल से सीखते हैं।

कंठस्थ 2.0

- राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण

एक स्मृति आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर है जिसे राजभाषा विभाग ने सी-डैक, पुणे की सहायता से विकसित किया है। इसका लोकार्पण दिनांक 18 अगस्त, 2018 को तत्कालिन माननीय गृह राज्य मंत्री ने मॉरिशस में किया था। इसमें एक अनुवाद स्मृति (टीएम) डाटाबेस होता है जो अनुदित डाटा को स्त्रोत-भाषा खंड और लक्ष्य-भाषा खंड के रुप में संग्रहित करता है। इस अनुवाद स्मृति प्रणाली की मुख्य विशेषता यह है कि किसी नई फाइल का अनुवाद करते समय यह अनुवादक को पहले से अनुदित खंड को पुन: प्रयोग करने की अनुमति देती है। अनुवाद के लिए प्रणाली के प्रत्येक अनुवर्ती प्रयोग के साथ टीएम डाटाबेस लगातार समृद्ध होता जाता है। इसकी ग्लोबल स्मृति में अब तक इक्कीस लाख से अधिक वाक्यों को अपलोड किया जा चुका है, जो कि सबके लिए उपलब्ध है। कंठस्थ को अब और भी उन्नत बनाया गया है। इसके उन्नत संस्करण कंठस्थ-2.0 का दिनांक 14 सितंबर, 2022 को लोकार्पण किया गया। कंठस्थ-2.0 में कुछ अतिरिक्त विशेषताएँ समाविष्ट की गई हैं, जो निम्नानुसार हैं -

1. **न्यूरल मशीन अनुवाद (यह वाक्यों के अनुवाद करने के लिए समृति आधारित डेटा बेस के साथ-साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग करेगा।)**
2. **संभावी टंकण अथवा स्वत: सुझाव (यह कुछ वाक्यांशों के अनुवाद के लिए स्वत: सुझाव देगा।)**
3. **बोली से पाठ अर्थात् स्पीच टू टेक्स्ट (एसटीटी) (प्रयोक्ता बोल कर टंकण कर पाएँगे।)**
4. **स्वचालित चैट बेस सेवा (यह “क्या मैं आपकी मदद करूँ” जैसी सहायता विंडो सेवा प्रदान करेगा।) https://kanthasth-rajbhasha.gov.in > उपयोगकर्ता लॉगिन.**

- **निर्माण संगठन के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों से अनुरोध है कि वे अनुवाद हेतु कंठस्थ-2.0 का प्रयोग करें क्योंकि यह कार्यक्षम (एफिशिएंट) के साथ-साथ स्वदेशी है।**

---- गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) के सौजन्य से.

जितना हम अध्ययन करते हैं, उतना ही हमें अपने अज्ञान का आभास होता जाता है।

अखवारों की सुर्खियाँ

दैनिक पूर्वोदय

गुवाहाटी, वृहस्पतिवार, 22 सितंबर,

dainikpurvoday.com

महाप्रबंधक (निर्माण) कार्यालय में राजभाषा सप्ताह शुरू

पूर्वोदय संवाददाता

गुवाहाटी, 21 सितंबर। पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण संगठन) के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 हरि शंकर यादव ने मंगलवार को दीप प्रज्ज्वलन कर राजभाषा सप्ताह का उद्घाटन किया। सरस्वती वंदना श्रीमती गोपा लाला ने की। श्री यादव ने हिंदी दिवस के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के क्रम में गुजरात के सूरत में गृह मंत्री अमित शाह ने हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ किया। उन्होंने रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर दिया गया भाषण पढ़कर सुनाया। इस मौके पर निर्माण संगठन से प्रकाशित होने वाले 56वां ई-गृह पत्रिका 'संवाद पत्र' का विमोचन भी किया गया। उन्होंने कहा कि रेल के कामकाज में हिंदी के प्रयोग में तभी वृद्धि हो सकती है जब हमें लिखने का अभ्यास हो। उन्होंने राजभाषा विभाग को नई प्रौद्योगिकी के मानदंडों का अनुकरण करने का भी सुझाव दिया।

आज वही भाषा प्रगति कर सकती है जो प्रौद्योगिकी, विज्ञान की भाषा बने। राजेश कुमार, मुख्य इंजीनियर/नि.-9 सह मुख्य राजभाषा अधिकारी/नि. ने सभी सदस्यों का स्वागत किया। तत्पश्चात अधिकारियों के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। अंत में राजेश रंजन कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पूसी रेलवे (निर्माण) कार्यालय में राजभाषा सप्ताह संपन्न

गुवाहाटी, 29 सितंबर (पू.सं.)। पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण) के मुख्य इंजीनियर पीपी पांडे की अध्यक्षता में मंगलवार को राजभाषा सप्ताह के समापन के अवसर पर क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई। जिसका ऑनलाइन प्रस्तुतिकरण राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी/निर्माण ने किया।

श्री पाण्डे ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग के लिए अनुकूल वातावरण बनाए जाने पर विशेष बल दिया। निर्माण संगठन से ऑनलाइन प्रकाशित होनेवाली पत्रिका के लिए कर्मचारियों से मूल रचना प्रदान करने पर जोर दिया। श्री पांडे ने ई-ऑफिस, एचआरएमएस एवं ई-पास में हिंदी के प्रयोग पर जोर देते हुए कहा कि इससे नई तकनीक में हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा।

इस दौरान कवि गोष्ठी भी आयोजित ... स्टेशन के स्टेशन अधीक्षक सुधीर कुमार मेहता विशेष रूप से आमंत्रित थे, जिनकी हास्य कविता सभी श्रोताओं को लोटपोट कर दिया।

इनके अलावा राजेश रंजन कुमार, कुलदीप तिवारी, अंटूलाल ठाकुर, बिजीत रामसियारी ने भी अपनी-अपनी कविताओं से सभी को मनोरंजन किया। कवि गोष्ठी के पश्चात् राजभाषा सप्ताह, 2022 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं मे भाग लेकर विजयी प्रतिभागियों को श्री पांडे ने पत्र प्रदान कर प्रोत्साहित किया। इसके अलावा 20 नवंबर, 2021 को आयोजित संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान उत्कृष्ट सहयोग प्रदान करने वाले दो अधिकारियों अभिजीत मजुमदार व महावीर सिंह को विशेष रूप में सम्मानित किया गया। उक्त समारोह में एसके सहगल, हरकेश मीना, धीरेन्द्र राय, अचल कुमार सिंह विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन तथा अंत में धन्यवाद प्रस्ताव राजेश रंजन कुमार ...

गुवाहाटी, 7 नवंबर। श्री हरि शंकर यादव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 की अध्यक्षता में पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण)/मालीगांव द्वारा हिंदी माध्यम से भू-स्खलन विषय पर विशेष तकनीकी गोष्ठी आयोजित की गयी। उक्त तकनीकी गोष्ठी में श्री केके अग्रवाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-2, श्री कौशल किशोर, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-3, श्री राजेश कुमार, मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण, विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-7, दीपक कुमार गुप्ता, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण के अलावा सभी विभागाध्यक्ष तथा निर्माण संगठन के उप मुख्य इंजीनियर, कार्यपालक इंजीनियर और सहायक कार्यपालक इंजीनियर उपस्थित थे। श्री हरि शंकर यादव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 ने कहा कि इस तकनीकी गोष्ठी में हिंदी माध्यम से अपने विचारों के आदान-प्रदान का मुख्य उद्देश्य यह है कि निर्माण संगठन में राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार कर भारत सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित की जा सके। तकनीकी गोष्ठी हमारे तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में हुए अद्यतन एवं क्रमागत ...

निर्माण-1 के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी हरिशंकर यादव तकनीकी गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए।

रेलपथ निर्माण के दौरान होने वाली भूस्खलन के कारण उभर कर आने वाली कठिनाइयों को दूर करते हुए तथा समय और लागत में कमी लाते हुए निर्माण कार्य को अबाध रूप से आगे बढ़ाना है। खासकर, पूर्वोत्तर के सभी राज्यों की राजधानियों को जोड़ने के दौरान दुर्गम पहाड़ी और घाटियों के बीच रेल संरचना संबंधी निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने के क्रम में होने वाले भूस्खलन जैसे कठिनाइयों और समस्याओं के समाधान के रूप में यह तकनीकी गोष्ठी अत्यंत लाभप्रद साबित होगा। चूंकि, रेलवे भारत को जोड़ने का एक ...

भूस्खलन आज चर्चा का प्रमुख विषय है। विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-7 ने भूस्खलन विषय पर अपना ऑनलाइन प्रस्तुतीकरण रखते हुए उपस्थित सभी अधिकारियों के बीच अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया जिस पर हिंदी माध्यम से महत्वपूर्ण चर्चा की गयी। इसके अलावा श्री विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-7 ने अपनी स्वरचित कविता जिसका शीर्षक पहाड़ का इंजीनियर है प्रस्तुत किया जिसकी सभी ने प्रशंसा की। श्री राजेश रंजन कुमार, राजभाषा ...

भू-स्खलन विषय पर हिंदी में तकनीकी संगोष्ठी आयोजित

गुवाहाटी, 7 नवंबर (एसं)। हरि शंकर यादव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 की अध्यक्षता में पूर्वोत्तर सीमा रेल (निर्माण)/मालीगांव द्वारा हिंदी माध्यम से भू-स्खलन विषय पर विशेष तकनीकी संगोष्ठी आयोजित की गयी। उक्त तकनीकी संगोष्ठी में केके अग्रवाल, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-2, कौशल किशोर, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-3, राजेश कुमार, मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण, विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-7, दीपक कुमार गुप्ता, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/निर्माण के अलावा सभी विभागाध्यक्ष तथा निर्माण संगठन के उप मुख्य इंजीनियर, कार्यपालक इंजीनियर और सहायक कार्यपालक इंजीनियर उपस्थित थे। हरि शंकर यादव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण-1 ने कहा कि इस तकनीकी संगोष्ठी में हिंदी माध्यम से अपने विचारों के आदान-प्रदान का मुख्य उद्देश्य यह है कि निर्माण संगठन में राजभाषा हिंदी ... जा सके। तकनीकी गोष्ठी हमारे तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में हुए अद्यतन एवं क्रमागत उन्नति से अवगत कराता है। किसी भी तकनीकी समस्या का नए ढंग से समाधान के लिए ऐसी तकनीकी गोष्ठी महत्वपूर्ण है। इस संगोष्ठी के आयोजन का मुख्य उद्देश्य यह है कि पूर्वोत्तर के दूर-दराज के इलाकों में रेलपथ निर्माण के दौरान होने वाली भूस्खलन के कारण उभर कर आने वाली कठिनाइयों को दूर करते हुए तथा समय और लागत में कमी लाते हुए निर्माण कार्य को अबाध रूप से आगे बढ़ाना है। खासकर, पूर्वोत्तर के सभी राज्यों की राजधानियों को ... को आगे बढ़ाने के क्रम में होने वाले भूस्खलन जैसे कठिनाइयों और समस्याओं के समाधान के रूप में यह तकनीकी गोष्ठी अत्यंत लाभप्रद साबित होगा। चूंकि, रेलवे भारत को जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है जिससे यह भारत को आर्थिक उन्नति के साथ-साथ सामाजिक उत्थान में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। अतः इसके सामने आनेवाली जो भी कठिनाइयां हैं उन्हें दूर करना अत्यंत आवश्यक है। इनमें से भूस्खलन आज चर्चा का प्रमुख विषय है। विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-7 ने भूस्खलन विषय पर अपना ऑनलाइन प्रस्तुतीकरण रखते हुए उपस्थित सभी अधिकारियों के बीच अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया जिस पर हिंदी माध्यम से महत्वपूर्ण चर्चा की गई। इसके अलावा विक्रम गुप्ता, मुख्य इंजीनियर/निर्माण-7 ने अपनी स्वरचित कविता जिसका शीर्षक पहाड़ का इंजीनियर है प्रस्तुत किया जिसकी सभी ने प्रशंसा की। राजेश रंजन कुमार, राजभाषा अधिकारी ...

दैनिक पूर्वोदय

पूसी रेलवे में सतर्कता जागरूकता सप्ताह

गुवाहाटी, 7 नवंबर (पू.सं.)। पूसी रेलवे में सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2022 'एक विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत' विषय के तहत मनाया गया। सप्ताह अनुपालन 31 अक्टूबर से शुरू हुआ था और 6 नवंबर को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। पूसी रेलवे मुख्यालय, मंडलों, कार्यशालाओं, अन्य क्षेत्रीय इकाइयों आदि में सप्ताहव्यापी विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। क्षेत्रीय मुख्यालय में पूसी रेलवे के महाप्रबंधक अंशुल गुप्ता और मंडलों में संबंधित मंडल रेल प्रबंधकों ने शपथ दिलाई।

'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के एक हिस्से के रूप में क्षेत्रीय मुख्यालय में महाप्रबंधक, पूसी रेलवे की उपस्थिति में 'एक विकसित राष्ट्र के लिए भ्रष्टाचार मुक्त भारत' विषय पर एक 'संगोष्ठी' का आयोजन किया गया, जिसमें जोन के सभी वरिष्ठ रेल अधिकारियों ने भाग लिया। 'संगोष्ठी' के दौरान पूसी रेलवे के महाप्रबंधक द्वारा एक 'सतर्कता बुलेटिन' का भी विमोचन किया गया। अनुपालन के हिस्से के रूप में विभिन्न विभागों के बीच जागरूकता पै... करने के लिए एक लघु फिल्म निर्मा... प्रतियोगिता भी आयोजित की गई थ... कुल मिलाकर 13 लघु फिल्में शामि... हुई और पहला पुरस्कार पूसी रे... निर्माण संगठन, द्वितीय प्रधान मुख्य सुरक्षा आयुक्त, मालीगांव और तृती... पुरस्कार डीजल शेड, न्यू गुवा... टीम ने जीता।

छोटी छोटी बातों का आनंद उठाइए, क्योंकि हो सकता है कि किसी दिन आप मुड़ कर देखें तो आपको अनुभव हो कि ये तो बड़ी बातें थी।

नागालैण्ड के माननीय मुख्य मंत्री दिनांक 26.08.2022 को सुखोवी डिमापुर कोहिमा तक बढ़ाए गए नागालैण्ड-गुवाहाटी डोनी पोलो एक्सप्रेस का उद्घाटन करते हुए।

रेल संरक्षा आयुक्त दिनांक 30.08.2022 को रंगिया होते हुए न्यू बंगाईगाँव अगठोरी दोहरीकरण परियोजना के तहत न्यू बंगाईगाँव-बिजनी खण्ड का निरीक्षण करते हुए।

बिजनी

E NO: 448
ER: AIE
:8X30.50M

एक राष्ट्र में नागरिकों की भूमिका

-- श्री रामकेश मीना, सीनियर सेक्शन इंजीनियर/निर्माण

किसी भी लोकतांत्रिक देश में नागरिकों का सतत् सर्वांगीण विकास राष्ट्र की सर्वोच्च प्राथमिकता होती है। भारत जैसे राष्ट्र में जब हम नागरिक विकास की अवधारणा के बारे में सोचते हैं तो हमें बहुत से मुद्दों का सामना करना पड़ता है जिसमें महंगाई, बेरोजगारी, देश के सुदूरवर्ती भागों में आधारभूत सुविधाओं की कमी, महंगी शिक्षा और महंगा ईलाज आदि मुख्य हैं।

1. भारत में चुनावों में राजनेताओं द्वारा असली मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए भावनात्मक मुद्दों को आगे कर दिया जाता है और चुनावों में असली मुद्दे पीछे छूट जाते हैं। वर्तमान में कुछ तथाकथित समाचार चैनल भी भावनात्मक भड़काऊ मुद्दों को आगे कर असली मुद्दों को मुख्यधारा से गायब कर देते हैं।

2. भारत में आयकर में छूट की सीमा केवल दो लाख पचास हजार रुपये है जो बहुत समय से संशोधित नहीं हुई है। और पाँच लाख रुपये की आय से उपर 20 प्रतिशत कर है जिसको वर्तमान में महंगाई के इस दोर में संशोधित करने की बहुत जरूरत है। यहाँ विशेष तोर पर ये तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि एक कर्मचारी द्वारा प्राप्त आय पर पहले वह आयकर देता है और उसके बाद बचे रुपयों में से किसी भी जरुरत के लिए खर्च करने पर वस्तु एवं सेवा कर जैसे कर देता है। इस तरह एक कर्मचारी दोहरी कर कटोती का शिकार होता है।

3. आम नागरिकों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने वाली आधारभूत जरूरत की चीजें जैसे एलपीजी गैस सिलेंडर, पेट्रोल, डीजल जैसी चीजों के दाम आसमान छू रहे हैं।

4. भारत जैसे युवा देश में जहाँ युवा आबादी देश के लिए एक बहुत बड़ा संसाधन हो सकती है वहां रोजगार की कमी के कारण युवा दिशाहीन होकर राष्ट्र के विकास में उचित योगदान नहीं दे पा रहे हैं।

5. जहाँ देश के सुदूरवर्ती भागों जैसे पूर्वोत्तर भारत आदि में आज भी आधारभूत सुविधाओं जैसे परिवहन के साधन, स्वास्थ्य, उच्चशिक्षा, उद्योग धंधों आदि की बहुत कमी है वहीं चुनावों में जीत के लिए राजनेताओं और राजनैतिक पार्टियों द्वारा अथाह रुपया पानी की तरह बहाया जाता है।

6. भारत में वीआईपी संस्कृति में एक व्यक्ति के आवागमन के लिए विद्यालय जाते बच्चे, ऑफिस जाते कर्मचारी, काम पर जाते मजदूर, ईलाज के लिए अस्पताल जाते लोगों आदि को घंटो तक रोक कर सारा प्रशासन वीआईपी की सेवा में लगा रहता है। एक लोकतांत्रिक देश में वीआईपी संस्कृति में कमी आनी चाहिए।

7. देश की आजादी के आंदोलन में जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र से परे सभी देशवासियों ने मिलकर अपना

- अपना योगदान दिया है लेकिन आज हम धार्मिक, जातिगत, क्षेत्रीय और भाषाई आधार पर देश के नागरिकों से आपस में ही भेदभाव करते हैं। इन सबसे उपर उठकर हमें एक राष्ट्र के रुप में सोचने की जरूरत है जहाँ देश के प्रत्येक नागरिक को आगे बढ़ने के अवसर मुहैया करवा सकें।

8. आज निजी विद्यालयों / महाविद्यालयों में शिक्षा एक व्यवसाय बन गयी है और इतनी महंगी हो गई है कि उच्च शिक्षा आम आदमी की पहुंच से बाहर हो चुकी है। शिक्षा के सीमित अवसर आम नागरिक के विकास को सीमित कर देते हैं।

9.निजी अस्पतालों में ईलाज बहुत महंगा हो गया है अगर परिवार का कोई सदस्य गंभीर बीमारी से ग्रसित हो जाये और निजी अस्पताल में ईलाज करवाना पड़े तो अस्सी प्रतिशत भारतीय परिवार कर्ज के बोझ तले दबने को मजबूर हो जाते हैं।

10. वर्तमान में पूँजीवाद विश्व पर हावी होता जा रहा है। हमारा देश भी इससे अछूता नहीं है। जहाँ सम्पत्ति केवल कुछ ही हाथों में सिमट रही है। छोटी-छोटी दुकानों की जगह बडे बडे रिटेल स्टोर बाजार पर कब्जा कर रहे हैं।

कोरोना महामारी जैसे संकट के समय जहाँ आम नागरिकों की जमा पूंजी भी खर्च हो गयी वहीं बड़े-बड़े उद्योगपतियों के लिए ये आपदा में अवसर की भाँति उनकी सम्पत्ति में डेढ़ गुना-दो गुना बढ़ोत्तरी का अवसर लेकर आया है।

11. एक लोकतांत्रिक देश में सत्ता का विकेन्द्रीकरण प्रमुख ध्येय होता है जहाँ देश के ज्यादा से ज्यादा नागरिक देश के विकास के लिए नीतियाँ बनाने में भागीदारी निभा सकें। वहीं वर्तमान में समूचे विश्व में बढते कट्टरवाद और छद्म राष्ट्रवाद के कारण कट्टरपंथी समूहों द्वारा ज्यादातर देशों की सत्ता पर काबिज होकर सत्ता को व्यक्ति केन्द्रित किया जा रहा है। जहाँ सत्ता एक ही जगह इकट्ठी हो रही है। और ऐसी सत्ता आम नागरिकों को उनके अधिकारों से वंचित कर रही है। अब समय है जब देश के नागरिकों को Course - Correction की ओर ध्यान देना चाहिए। ध्यान रखें कि एक लोकतांत्रिक देश में असली शक्ति देश के आम नागरिक के हाथों में होती है।

देश की इन सभी समस्याओं का समाधान आम नागरिकों द्वारा चुनावों में, चाहे वो ग्राम पंचायत के चुनाव हो, नगर निकाय, विधान सभा या संसद के चुनाव हो इनमें अपने विवेक, तर्कशक्ति और समझ द्वारा धर्म, जाति, लिंग, रंग के भेदभाव से उपर उठकर उचित प्रतिनिधि चुन कर भेजने चाहिए। एक राष्ट्र के नागरिकों की सवाल पूछने, तर्क करने की प्रवृत्ति एक लोकतांत्रिक राष्ट्र की सफलता के लिए एक जरूरी कारक है।

देश के नागरिकों को व्यक्ति पूजा से बचना चाहिए। व्यक्ति पूजा आम नागरिकों को अपने अधिकारों से वंचित करती है। और लोकतांत्रिक देश का असली उद्देश्य आम नागरिकों को ज्यादा से ज्यादा अधिकार देकर उन्हें सशक्त और सम्रद्ध बनाना होता है।

राजनीति में हिस्सा न लेने का सबसे बड़ा दंड यह है कि अयोग्य व्यक्ति आप पर शासन करने लगते हैं।

क्षेत्रीय रेल हिंदी निबंध प्रतियोगिता (आधार वर्ष - 2022) का चित्र

क्षेत्रीय रेल हिंदी वाक् प्रतियोगिता (आधार वर्ष - 2022) का चित्र

क्षेत्रीय हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता (आधार वर्ष - 2022) का चित्र

क्षेत्रीय रेल हिंदी निबंध, वाक् तथा टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता (आधार वर्ष - 2022) का आयोजन दिनांक 24.11.2022 एवं 25.11.2022 को महाप्रबंधक (निर्माण) के सभा कक्ष में किया गया। हिंदी निबंध प्रतियोगिता दिनांक 24.11.2022 को आयोजित की गयी जिसमें विभिन्न विभागों के कुल 09 (नौ) कर्मचारी शामिल हुए। निबंध प्रतियोगिता में दो वैकल्पिक विषय रखे गए थे। विषय इस प्रकार है - 1. शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव, 2. आजादी का अमृत महोत्सव - भारतीय रेल की भूमिका।

हिंदी वाक् प्रतियोगिता भी दिनांक 24.11.2022 को आयोजित की गयी जिसमें विभिन्न विभागों के कुल 06 (छह) कर्मचारी शामिल हुए। हिंदी वाक् प्रतियोगिता में दो वैकल्पिक विषय रखे गए थे। विषय इस प्रकार है - 1. भारतीय रेल की शान - हमारे खिलाड़ी महान, 2. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का वर्तमान परिस्थिति में महत्व। वाक् प्रतियोगिता के निर्णायक मंडली में 1. श्री अचल कुमार सिंह, सहा. कार्यपालक इंजीनियर/निर्माण(अभिकल्प), 2. श्री धीरेन्द्र राय, सहा. कार्यपालक इंजीनियर/निर्माण(योजना) थे।

ठीक इसी प्रकार हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता दिनांक 25.11.2022 को आयोजित की गयी जिसमें विभिन्न विभागों के कुल 09 (नौ) कर्मचारी शामिल हुए।

उपर्युक्त प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी को अखिल रेल स्तर पर आयोजित होने वाली हिंदी निबंध, वाक् और टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति होगी।

वीर लाचित बरफूकन की 400वीं जयंती

आहोम सेना के प्रमुख सेनापति वीर लाचित बरफूकन की 400वीं जयंती को याद करने के लिए पूर्वोत्तर सीमा रेल ने रेल मुख्यालय और सभी मंडलों में 21 से 24 नवम्बर, 2022 तक लाचित दिवस मनाया। पूर्वोत्तर सीमा रेल एवं निर्माण संगठन के महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता और अन्य अधिकारियों ने दीप प्रज्वलित कर वीर लाचित बरफूकन के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

इस मौके पर पूर्वोत्तर सीमा रेल एवं निर्माण संगठन के अधिकारी, कर्मचारी और विभिन्न संघों एवं यूनियनों के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। मुख्यालय परिसर में डॉ. भूपेन हजारिका सभा गृह में वीर लाचित बरफूकन की जीवनी और वीरतापूर्ण कार्यों पर एक प्रदर्शनी लगाई गई।

पूर्वोत्तर सीमा रेल के सभी मंडलों में भी दीप जलाकर वीर लाचित बरफूकन के चित्र पर पुष्प अर्पित कर इस अवसर को चिह्नित किया गया। इस शुभअवसर पर भारत स्काउट एवम् गाइड, पूर्वोत्तर सीमा रेल के सदस्यों ने मुख्यालय और सभी मंडलों में वीर लाचित बरफूकन के सराईघाट लड़ाई के दौरान वीरता से संबंधित नाटक का मंचन किया।

सैंड कलाकार श्री रॉबिन बर द्वारा वीर लाचित बरफूकन की जीवनी को चित्रित करने के लिए सैंड पैंटिंग का प्रदर्शन किया गया।

पूर्वोत्तर सीमा रेल के स्कूलों में प्रभात फेरी, निबंध प्रतियोगिता, ड्राइंग और पैंटिंग प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इस अवसर पर रंग भवन, मालीगाँव में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इस अवसर पर पूर्वोत्तर सीमा रेल के महाप्रबंधक श्री अंशुल गुप्ता ने विशाल और बेहतर सुसज्जित मुगल सेनाओं को असम से बाहर खदेड़ने में आहोम सेना के प्रमुख सेनापति वीर लाचित बरफूकन की भूमिका का उल्लेख किया।

अंत नहीं आरंभ है

आरंभ वो जो नवजीवन गान दे,
अंत वो जो आरंभ का ज्ञान दे।
आरंभ वो जो जीवन को नयी उड़ान दे,
अंत वो जो आरंभ को नयी पहचान दे।
अंत वो जो पतझड़ को बसंत दे,
आरंभ वो जो अंत को भी अनन्त कर दे।
अंत ही नए जीवन का प्रारंभ है,
अंत में ही अंतत: निहित आरंभ है।
जब सब कुछ हो बिखरा हुआ,
तो समझना, ये नई एकता का शुभारंभ है।
ये अंत नहीं आरंभ है।।

- नम्रता भट्टाचार्य

मेरे इशारों पर आज भी वो नाचता है

-- श्रीमती जया शर्मा,

मैं कितना प्यार करती हूँ वो जानता है,
मेरे इशारों पर आज भी वो नाचता है,
मेरे इशारों पर आज भी वो नाचता है।

ढल रही है उम्र मेरी, ये तुम्हारी सोच है,
बढ़ रहा है इश्क मेरा, इसीलिए तो जोश है,
मैं जानती हूँ कि वो भी यह जानता है,
मेरे इशारों पर आज भी वो नाचता है।

चाँद सितारों को तोड़ लाना आसमाँ से,
ना सोंचो ये कल की तो बात है,
आज भी एक बार जो कह दूँ,
कैसे सरपट भागता है,
मेरे इशारों पर आज भी वो नाचता है।

बांध कर रख लूँ अपने पहलू में,
ऐसा खयाल कभी आया ही नहीं,
कहाँ जाता है? क्या करता है?
कभी उसने बताया भी नहीं,
पर थकान अपनी सारी मेरी बाहों में उतारता है,
मेरे इशारों पर आज भी वो नाचता है।

रूहानी रिश्ता है, ईश्वर ने मिलाया है हमें,
हम एक दूसरे के हैं, एक दूजे के लिए बनाया है हमें,
प्यार छुपाता है मुझसे, कितना डांटता है,
मेरे इशारों पर आज भी वो नाचता है,
आज भी वो नाचता है...

प्लास्टिक थैलियों का प्रयोग न करें, क्योंकि - 1. कूड़े में पड़ी प्लास्टिक थैलियों को खाने से अनेक गायें मर रही हैं। 2. इनमें रखे खाद्य पदार्थ रोग पैदा करनेवाले होते हैं। 3. जमीन में फैलकर ये जमीन की उर्वरा शक्ति को नष्ट कर रही है। 4. ये नालियों में रूकावट पैदा करके गंदगी फैलाती हैं। इसलिए इन हानिकारक थैलियों की जगह कपड़े के थैलों का प्रयोग करें। अनेक देशों ने प्लास्टिक थैलियों के निर्माण एवं प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, केन्द्रीय कार्यालय -2 की बैठक की झलक

दिनांक 14 दिसंबर, 2022

श्री अंशुल गुप्ता,महाप्रबंधक,पूर्वोत्तर सीमा रेल एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति-2 की अध्यक्षता में आज बैठक हुई। जिसमें गुवाहाटी नगर स्थित 64 केंद्रीय कार्यालयों में हिंदी में हो रही प्रगति पर विचार-विमर्श, इसके प्रचार-प्रसार को और आगे बढ़ाने का संयुक्त निर्णय लिया गया

Translate Tweet

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए। - महावीर प्रसाद द्विवेदी